सेक्स नॉलेज

By

Abde Mustafa Official

AMO

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल के बारे में

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल एक इस्लामी तन्ज़ीम है जो अहले सुन्नत व जमाअ़त के मन्हज पर काम कर रही है। इस तन्ज़ीम का मक़्सद क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात को आम करना है और खिदमते खल्क़ भी इसी मक़्सद के तहत है।

सना 2014 ईस्वी में हिन्दुस्तान के शहर हज़ारीबाग से चंद लोगों ने मिल कर इस सफ़र का आगाज़ किया फिर आगे चल कर कई लोग इस में शामिल होते गये और बहुत ही क़लील मुद्दत में अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल एक तन्ज़ीम बन कर सामने आयी।

आगाज़ इस तरह हुआ कि लोगों में इल्म की कमी और आमाल से दूरी को देखते हुये हफ्ता वार इज्तिमाआत का एहतिमाम किया गया जिस में हर हफ्ते अलग-अलग घरों में महफ़िलें सजाई जाती फिर इल्मी और इस्लाही बयानात दिये जाते और उस के लिये उलमा -ए- अहले सुन्नत को मदऊ किया जाता था।
कई महीनों बल्कि एक साल से ज़ाइद ये सिलसिला जारी रहा। इस के साथ-साथ यादगार अय्याम की मुनासिबत से जलसे करवाना, मीलादुन्नबी के जुलूस का एहतिमाम करना और खल्क़ की खिदमत भी जारी रही।

इस के बाद हम ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रिये तेज़ी से फैल रही बुराईयों को देखा तो महसूस हुआ कि इस मैदान में भी उतरने की सख्त ज़रूरत है और फिर अपने मक़्सद के हुसूल के लिये हम ने इस तरफ रुख किया।

मुख्तलफ़ सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों और एप्लीकेशंस पर जब काम शुरू किया गया तो बहुत ही कम वक़्त में बढ़ती मक़बूलियत को देख कर इस का यक़ीन हो गया कि इस मैदान में काम करना कितना ज़रूरी है।
इस के लिये हम ने फेस बुक, वॉट्सएप्प, ब्लॉगर और बाद में टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और वेबसाइट्स को ज़रिया बना कर लोगों तक पहुँचने की कोशिश की।
तन्ज़ीम से मुन्सलिक हर शख्स की पुर ख़ुलूस कोशिशों ने बहुत जल्द अपना रंग दिखाया और देखते ही देखते ये नाम "अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल" हज़ारों लोगों ने जान लिया।

इस तन्ज़ीम की जानिब से :

इल्मी, तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों को आम किया जाता है ताकि लोगों के अक़ाइदो, नज़रियात और आमाल की इस्लाह हो सके,
तहक़ीक़ी मौज़ूआत पर रिसाले तरतीब दिये जाते हैं।

कुतुब व रसाइल को टेलीग्राम के ज़रिये आम किया जाता है,
तहरीरात और रसाइल को चन्द मुख्तलफ़ ज़बानों में तर्जुमा कर के आम किया जाता है ताकि ज़्यादा लोगों तक पैगाम पहुँचाया जा सके,
वॉट्सएप्प पर सैकड़ों ग्रुपों में लोगों को जोड़ कर मुख्तलफ़ मौज़ूआत पर तहरीरें वग़ैरह भेजी जाती हैं,
यू-ट्यूब पर वीडियोज़ रिकॉर्ड कर के अपलोड की जाती हैं,
इंस्टाग्राम पर तस्वीरें अपलोड की जाती हैं जो आयात, अहादीस और अक़्वाल पर मुश्तमिल होती हैं,
वेबसाइट पर इल्मी मवाद को जमा किया जाता है ताकि आसानी से लोग फाइदा उठा सकें,
इन के अलावा सुन्नियों के आपस में निकाह के लिये एक सर्विस बनाम "ई निकाह सर्विस" शुरू की गयी है जहाँ पूरे हिन्दुस्तान से निकाह के लिये सुन्नी लड़के और लड़कियों की प्रोफाइल बनायी जाती है ताकि लोग आसानी से रिश्ता तलाश कर सकें। अब तक अहले सुन्नत के लिये कोई खास ऐसी सर्विस मौजूद नहीं थी। अल्लाह की तौफ़ीक़ से हमें इस पर भी काम करने का मौक़ा मिला।

ये सफ़र जारी है और हर दिन ये कोशिश की जाती है कि इसे पहले से बेहतर बनाया जाये और बड़े से बड़े पैमाने पर काम किया जाये। इंशा अल्लाह ये कोशिशें इस तन्ज़ीम के साथ मिल कर काम करने वालों के लिये मगफ़िरत का ज़रिया होंगी और उस दिन जब लोगों के आमाल ज़ाहिर होंगे और हिसाबो किताब होगा तो ये आज का काम उस दिन के लिये आराम होगा। इंशा अल्लाह।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

Contents

"अल्लाह हक़ फ़रमाने में शर्माता नहीं" 3
एनल सेक्स (Anal Sex) 6
ओरल सेक्स (Oral Sex) 10
मुबाशरत भी सदक़ा है 12
दुल्हन के बालों को पकड़ कर दूल्हा ये दुआ पढ़े 19
सेक्स पोजीशन (Sex Position) 22
सेक्स टाइम (जिमा के लिए वक़्त) 24
जिमा कितने दिनों पर करें? 26
जिमा (Sex) के वक़्त रौशनी (Light) 29
जिमा (Sex) के दरमियान बातें 30
औरत क्या करे? 31
बीवी शौहर के बुलाने पर मना ना करे 31
मुश्तज़नी (Masturbation) 34
मुश्तज़नी (Masturbation) कब जाइज़ है? 35
मुश्तज़नी के बारे में खुलासा ये है कि : 37
सुरअ़ते इन्ज़ाल (Premature Ejaculation) 39
सेक्स डॉल एंड सेक्स टॉयज़ (Sex Doll And Sex Toys) 44
नशे की हालत में जिमा (Sex) करना 45
हमल और सेक्स (Pregnancy And Sex) 46

कंडोम्स का इस्तेमाल.....47
हैज़ के दौरान सोहबत.....49
बीवी के हाथ से मनी निकलवाना.....51
लव बाइट्स.....52
मिस्वाक और खुशबू का इस्तिमाल.....53
Homosexuality (हम जिंस परस्ती).....54
Hymen (पर्दा -ए- इस्मत).....55
जिमा की बातें लोगों को बताना.....56
किसी से शादी के बाद उस से ज़ाती सवालात करना.....57
बीवी का दूध हलक़ में चला जाये तो.....59

सेक्स नॉलेज

एक आम इंसान माँ के पेट से सब कुछ सीख कर पैदा नहीं होता बल्कि इस दुनिया में आ कर सीखना पड़ता है।

चलना, बोलना, लिखना, पढ़ना और बालिग होने के क़रीब होता है तो नमाज़ का तरीक़ा सीखना पड़ता है,
रमज़ान में रोज़े रखने के लिये मसाइल सीखने पड़ते हैं,
पैसे हो जायें तो ज़कात के मसाइल सीखने पड़ते हैं,
हज और उमरा को जाये तो मसाइल का इल्म होना ज़रूरी है।

पैदाइश से ले कर मौत तक ये सिलसिला जारी रहता है कि इंसान कुछ ना कुछ सीखता रहता है और सेक्स नॉलेज भी इन्हीं में से एक है।

इस सीखने में ये बात खास अहमियत रखती है कि वो किस से क्या सीखता है। अगर दीन किसी बद मज़हब से सीखेगा तो आखिरत बरबाद हो जायेगी।

अगर ना अहल से कोई काम सीखेगा तो कामयाबी नहीं मिलेगी और सेक्स भी अगर गलत ज़रियों (Sources) से सीखता है तो नुक़सान उठाना पड़ेगा।

नमाज़, रोज़े वग़ैरह के मसाइल लोग उमूमन पूछ लिया करते हैं लेकिन सेक्स से मुतल्लिक़ पूछने में शर्म महसूस होती है हालाँकि ऐसा नहीं होना चाहिये।

अल्लाह त'आला क़ुरआन में इरशाद फ़रमाता है:

وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ

(33:53)

"अल्लाह हक़ फ़रमाने में शर्माता नहीं"

ये कोई बुरी बात नहीं कि आप इस बारे में इल्म हासिल करें बल्कि ज़रूरी है कि शादी से पहले ये जान लें कि क्या करना चाहिये और किन बातों से बचना चाहिये,

अगर आप को इल्म नहीं होगा तो मुमकिन है कि आप ऐसा कुछ कर जायें जो आप के कांधों पर गुनाहों के बोझ में इज़ाफ़ा कर दे।

हम कोशिश करेंगे कि आसान से आसान लफ्ज़ों में बयान करने की कोशिश करें ताकि हर शख्स को बात समझ में आ सके।
जहाँ उर्दू के थोड़े सख्त अल्फाज़ इस्तिमाल होंगे वहाँ ब्रेकेट में उसके आसान मानों को लिख दिया जायेगा।
साथ ही साथ कुछ इल्मी पॉइंट्स भी बयान किये जायेंगे।

शुरुआत इस बात से करते हैं कि निकाह करने का मक़सद क्या है?
अगर कोई ये सोचता है कि निकाह का मक़सद सिर्फ सेक्स की लज़्ज़त हासिल करना है तो ये सहीह नही है।
ये भी है लेकिन असल है औलाद का हुसूल।

हज़रते उमर फ़ारूक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि मैं सिर्फ क़ज़ा -ए-शहवत के लिए अपनी अज़वाज (बीवियों) के पास नही जाता बल्कि मेरी निय्यत अवलाद का हुसूल है, अगर ये मक़सद ना होता तो मेरी एक ही ज़ौजा (बीवी) होती।

(انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج10، ص343 بہ حوالہ فیضان فاروق اعظم، ج1، ص77)

एक मर्तबा आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया कि मै खुद को जिमा (Sex) करने पर इसलिए मजबूर करता हूँ कि मुमकिन है अल्लाह त'आला मुझे ऐसी नेक और सालेह औलाद अता फरमाए जो उसकी तस्बीह करे और हर वक़्त उसकी याद में मगन रहे।

(سنن کبری، کتاب النکاح، باب الرغبۃ فی النکاح، ج7، ص126، حدیث13460 بہ حوالہ ایضاً)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि मेरे वालिद (हज़रते उमर फ़ारूक़) शहवत के लिए निकाह नही करते थे बल्कि औलाद के हुसूल के लिए निकाह करते थे।

(طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج3، ص247 بہ حوالہ ایضاً)

अल्लाह त'आला इरशाद फरमाता है :

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ

(2:223)

"तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिए खेतियाँ हैं तो अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो आओ।"

क़ुरआन की इस आयत में बीवियों को शौहरों की खेती क़रार दिया गया है और ये इजाज़त दी गयी है के खेत मे जिस तरह चाहें आ सकते है।

अल्लामा अब्दुर रज़्ज़ाक़ भतरालवी लिखते है कि यहाँ औरतों को ज़मीन से तशबीह दी गयी है, जिस तरह ज़मीन में बीज (Seed) डाला जाता है उसी तरह बीवी के रहम (बच्चे दानी) में नुत्फ़ा जो बीज की तरह है डाला जाता है और अवलाद को ज़मीन की पैदावार से तशबीह दी गयी।

इस आयत का मुख्तसर मतलब ये है की तुम्हारी बीवियां तुम्हारे लिए खेती है यानी जिस तरह खेती से पैदावार होती है उसी तरह इनसे भी औलाद पैदा होती है
तुम अपनी बीवियों के पास आओ जिस तरह चाहो यानी उन से जिमा (Sex) तो अगले हिस्से में करो लेकिन जिमा करने की कैफियत मुअय्यन नही बल्कि बैठ कर या लेट कर, अगली जानिब से या पिछली जानिब से, जिस तरह चाहो उस तरह जिमा करने की तुम्हे इजाज़त है (लेकिन आगे के ही मक़ाम में, पोजीशन जैसी भी हो पर सेक्स आगे के मकाम में ही जाइज़ है)

(تفسیر نجوم الفرقان، ج5، ص487)

इस आयत से एक मसअला ये मालूम होता है कि औरत के आगे के मक़ाम में ही जिमा (Sex) किया जा सकता है क्योंकि बीज डालने की जगह आगे ही है और ये समझ आता है कि निक़ाह करने का असल मक़सद वही होना चाहिए जो निकाह

की हिकमत है और निकाह की हिकमत ही ये है कि औलाद पैदा हो और नस्ल बरक़रार रहे।

(تفسیر نجوم الفرقان، ج5، ص488)

एनल सेक्स (Anal Sex)

औरत के पीछे के मकाम (दुबुर) में जिमा करना जिसे एनल सेक्स (Anal Sex) कहा जाता है, जाइज़ नही है इसे जाइज़ कहने वाले बहुत बड़ी गलती करते है।

अल्लामा अब्दुर्रज़्ज़ाक़ भतरालवी लिखते है कि बाज़ रिवायात से बाज़ हज़रात गलती का शिकार हो गये और पीछे के मकाम में वती (Sex) को जाइज़ समझने लगे, इस पर एक हदीसे पाक का मुशाहिदा करें तो मसअला वाज़ेह हो जायेगा :

हज़रते इब्ने उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के गुलाम हज़रते नाफ़े'अ से पूछा गया कि लोग तुम्हारी तरफ ये बात कसरत से मंसूब करते है कि तुम कहते हो हज़रते इब्ने उमर औरतों से पिछली जानिब से (Sex Ka) फतवा देने को जाइज़ समझते थे तो उन्होंने कहा कि लोग मेरी तरफ झूट मंसूब करते हैं, हाँ अलबत्ता मै तुम्हें बताता हूँ कि असल मे हज़रते इब्ने उमर की हदीस क्या है

वो ये है कि एक दिन हज़रते इब्ने उमर के पास क़ुरआन -ए- पाक था (आप पढ़ रहे थे) जब आप इस आयत पर पहुँचे कि "तुम्हारी औरतें तुम्हारे लिए खेतियाँ है" तो आप ने फरमाया : ए नाफ़े'अ! क्या तुम इस आयत के मुतल्लिक़ कुछ जानते हो? तो मैंने कहा कि नहीं।

आप ने फरमाया हम क़ुरैश के लोग औरतों से जिमा पिछली जानिब से किया करते थे (यानी जिमा तो आगे के ही मक़ाम में किया जाता था लेकिन कैफियत ये होती थी के पीछे से करते है) फिर जब हम मदीने में (मुहाजिरीन ने) अंसार की औरतों से निकाह किये तो हम ने उन से इसी तरह जिमा करना चाहा (यानी पीछे से) जिस

तरह हम कुरैश की औरतों के साथ करते थे तो अंसार की औरतों ने इसे गलत समझा और नापसंद किया और इसे अज़ीम (जुर्म) समझा क्योंकि अंसार की औरतों ने यहूद की औरतों से ये मसअला हासिल किया था कि जिमा एक करवट की जानिब से किया जाये तो (जब हुज़ूर ﷺ के पास ये मसअला पहुँचा तो) ये आयात नाज़िल हुई कि जिस में अंसार के क़ौल (जो यहूद का था) को रद्द किया गया और औरतों को खेती से तशबीह दी गयी और अपनी खेती में हर तरह से आने की इजाज़त दी गयी (निसाई)

(تفسیر نجوم الفرقان، ج5، ص489)

इस आयत और फिर इसकी तफ़सीर से मालूम हुआ कि औरत के पीछे के मक़ाम में जिमा (Sex) जाइज़ नहीं और आगे के मक़ाम में जिमा करने के लिये कोई खास कैफ़ियत मुअ़य्यन नहीं है बल्कि पीछे से, आगे से, करवट से, खड़े हुये, बैठे हुये, दिन में या रात में कभी भी जिमा किया जा सकता है।

यहूदियों का ऐसा ख्याल था कि अगर कोई पीछे से आगे के मक़ाम में जिमा करता है तो बच्चा भेंगा (Cross Eye) पैदा होता है।

अल्लाह त'आला ने इस आयत में यहूद का रद्द फ़रमाया और मुसलमानों को एक मूखतसर सी आयत में कई मसाइल बता दिये कि औरतें तुम्हारी खेती हैं यानी मक़सद पैदावार होनी चाहिये और इसके लिये कैफ़ियत मुअ़य्यन नहीं और जब एक खास उज़्व (Part) इस खेती के लिये मुन्तखब किया गया है तो फिर पीछे के मक़ाम (दुबूर) में जिमा (Sex) करना जाइज़ नहीं है।

आज कल अक्सर नौजवानों के पास स्मार्टफोन मौजूद हैं जिस में हाई स्पीड नेट के साथ डाटा भी काफ़ी मौजूद होता है फिर वो इंटरनेट से गंदी फिल्में डाउनलोड करते हैं और एनल सेक्स को भी सेक्स का हिस्सा समझ कर शादी के बाद इस गुनाह में मुब्तला होते हैं।

इंटरनेट पर कसरत से ऐसी फिल्में और वेब सीरीज़ मौजूद हैं जिन से सेक्स नॉलेज हासिल करना अपनी मेरिड लाइफ (Married Life) को तबाह करने के बराबर है।

औरत के पीछे के मकाम में वती करने की मुमानअत अहादीस में सराहत के साथ मौजूद है हदीस का मफ़हूम है कि जिस शख्स ने हाइज़ा औरत (यानी जो हैज़ की हालत में हो, उस) से जिमा किया या औरत के पीछे के मकाम में जिमा किया या किसी काहीन (ज्योतिषी, नजूमी वगैरा) के पास गया तो उस ने इस शरीअत का इनकार किया जो अल्लाह त'आला ने अपने रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहो त'आला अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल की।

رواہ الامام احمد والترمذی والنسائی وابن ماجہ وعبد بن حمید والبیھقی وابن ابی شیبہ بہ حوالہ تفسیر در منثور از امام سیوطی، ج1، ص26

एक और हदीस का मफ़हूम है कि मलऊन है वो जो अपनी औरत के दुबुर में वती करे (यानी पीछे के मकाम में सेक्स करे)

رواہ احمد وابو داؤد، احکام القرآن از امام رازی، ج1، ص353،

احکام القرآن از ابن العربی مالکی، ج1، ص174،

الجامع الاحکام القرآن از امام قرطبی، ج3، ص87،

التفسیرات الاحمدیہ از علامہ ملا احمد جیون، ص110،

تفسیر ابن کثیر، ج1، ص263،

تفسیر صاوی، ص104،

تفسیر روح المعانی، ج2، ص124،

تفسیر جلالین، تفسیر مظہری، ج1، ص104

इन दलाइल से ये बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है की औरत के पीछे के मक़ाम में वती करना (जिसे Anal Sex कहेते है, ये) सख़्त नाजायज़ और गुनाह है।

एक तरफ़ जहाँ गंदी फिल्मों में ऐनल सेक्स को दिखाया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ़ गन्दी वेब सीरीज के ज़रिये ये पैगाम दिया जा रहा है कि ये कोई बुरी बात नहीं है।

एक दौर था कि सिम्पल मोबाइल्स हुआ करते थे और कम्प्यूटर के ज़रिये इंटरनेट का इस्तिमाल करने वालों की तादाद बहुत ज़्यादा नहीं थी पर अब स्मार्टफोन ने गंदी फिल्मों की दुनिया में ईधन (Fuel) का काम किया है।
अब हर शख्स के पास इंटरनेट की सहूलत मौजूद है और कुछ सेकंड के फासिले पर लाखों बल्कि करोड़ों गन्दी फिल्में स्टोर कर के रखी हुई हैं।
ना जाने कितनी वेबसाइट्स हैं जो एडल्ट वीडियो को प्रमोट कर रही हैं। एक वेबसाइट्स की रिपोर्ट के मुताबिक़ हर सैकेण्ड 1000 से ज़्यादा लोग वेबसाइट्स पर जाते हैं और हर दिन लाख नहीं मिलियन नहीं बल्कि बिलियंस की तादाद में लोग गंदी फिल्में देखते हैं।
हमारा अन्दाज़ा है कि 60 फीसद से ज़्यादा नौजवान बल्कि उस से भी ज़्यादा जिस में लड़कियाँ भी शामिल हैं, गंदी फिल्मों के नशे में मुब्तिला हैं।

शरीअ़त में ऐनल सेक्स (यानी औरत के पीछे के मक़ाम में मर्द का उज़्वे खास दाखिल करने की) इजाज़त तो बिल्कुल नहीं लेकिन अगर एक आम शख्स की तरह भी सोचा जाये तो ये हरकत बड़ी घटिया और घिनौनी मालूम होती है।

औरत के एक खास उज़्व को सेक्स के लिये खास किया गया है जिस तरह जिस्म के दूसरे आज़ा (पार्टस) के अपने अलग-अलग काम हैं। फिर इनको किसी दूसरे काम के लिये इस्तिमाल करना कैसे सहीह हो सकता है। और जब ऐसा किया जायेगा तो ज़ाहिर है कि कुछ गलत होगा।

औरत को भी इससे तकलीफ होती है क्योंकि फर्ज (वेजाइना, औरत की आगे की शर्मगाह) में जिमा के दौरान अपने आप एक तरी और चिकनाई आ जाती है जिससे आसानी होती है और चमड़े पर असर नहीं होता लेकीन दुबुर (पीछे के मक़ाम) में ऐसा नहीं होता जिसकी वजह से तकलीफ होना आम बात है और साथ मे खून

निकलने और पाखाने के रास्ते की झिल्ली (जो पतली होती है, उस) के फटने का भी अन्देशा है।
इतना ही नहीं पीछे के मक़ाम मे जो गंदगी होती है उससे इन्फेक्शन भी हो सकती है जो कई बीमारियों का सबब बन सकती है।

ये बातें जो नहीं जानते और शादी के बाद औरत के साथ जानवरों जैसा सुलूक करते हैं उनकी अज़्दवाजी ज़िंदगी (मेरिड लाइफ) से सुकून खत्म हो जाता है और ज़िंदगी भर परेशान रहते हैं।

ओरल सेक्स (Oral Sex)

एक अजीब तरीक़ा जो आज कल गंदी फिल्मों के ज़रिए आम किया जा रहा है वो है ओरल सेक्स यानी एक दूसरे की शर्मगाह को मुँह में लेना, चूमना और चूसना (सुनने में ही कितना खराब लगता है)

जिस मुँह से क़ुरआन की तिलावत की जाती है उस मुँह के साथ ऐसी हरकत कैसे की जा सकती है पर आज कल नौजवानों में ये तरीका आम होता जा रहा है और कुछ तो ये समझते है कि इस के बिना लज़्ज़त अधूरी रह जाती है।

जो मियाँ बीवी ऐसा करते है, वो पता नही कैसे एक दूसरे से नज़रें मिलाते है। ये शर्म से डूब मरने का मकाम है।

इमाम बुरहानुद्दीन हनफ़ी रहिमहुल्लाहु त'आला (मुतवफ्फा 616 हिजरी) लिखते है के जब मर्द अपने आले (Penis) को अपनी बीवी के मुँह में दाखिल करे तो कहा गया है के ये मकरूह है इसलिए के मुँह क़ुरआन पढ़ने की जगह है पस इस वजह से आले का मुँह में दाखिल करना मुनासिब नही।

(محیط برہانی، ج1، ص134)

फतावा आलमगीरी में हैं :
जब मर्द अपने आले (Penis) को अपनी बीवी के मुँह में दाखिल करे तो कहा गया है कि ये मकरूह है।

(فتاوی عالمگیری، ج5، ص572 بہ حوالہ فتاوی اتراکھنڈ، ج1، ص323)

अगरचे ये हराम नही लेकिन ऐसा करना सहीह नही है, इससे बचना चाहिए

अल्लामा मुफ़्ती खलील खान बरकाती लिखते है कि ये काम इन्तेहाई बेहयाई और बेअदबी का है और ऐसा (करने वाला) शख़्स निहायत अहमक़ और बेवक़ूफ़ है और अल्लाह से डरना चाहिए और अल्लाह त'आला की तरफ रुजू करे और सच्चे दिल से उस की बारगाह में तौबा करे और अपनी इस हरकत पर शर्मिंदा हो और आइंदा इस अमल के करीब भी न जाए।
हया और शर्म ईमान का आला दर्जा है और बुखारी की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया की जब तुझ में शर्म नहीं तो जो चाहे कर।

(فتاوی خلیلیہ، ج2، ص489)

एक और सवाल के जवाब में लिखते है कि ये अमल करने वालो के दिली गंदगी का पता देती है, सच्चे दिल से तौबा करें (ऐसे फे'ल से)।

(فتاوی خلیلیہ، ج3، ص211)

मुबाशरत भी सदक़ा है

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया की तुम में से किसी का अपनी बीवी के साथ मुबाशरत करना भी सदक़ा है।
(सहीह मुस्लिम)

ये सुन कर सहाबा ने अर्ज़ की कि क्या अपनी शहवत पूरी करने पर भी अज्र मिलेगा? इस पर हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया कि हाँ!
अगर वो हराम मुबाशरत करता तो क्या गुनाहगार ना होता? इसी तरह जाइज़ (तरीक़े से) मुबाशरत करने पर अज्र का मुस्तहिक़ है।

अब अगर आप सही तरीके से सेक्स करते हैं तो आपके लिए सवाब है और अगर आप को इल्म नहीं, आपने शर्म की वजह से सीखा ही नहीं या सीखा तो ग़लत ज़राए (Sources) से सीखा तो फिर आप नाजाइज़ तरीक़ा इख़्तियार करेंगे और गुनाहगार होंगे।

एनल सेक्स और ओरल सेक्स के बारे में बयान किया जा चुका है कि ये नाजाइज़ है, अब हम बयान करेंगे कि सहीह तरीक़ा क्या है और एक नये जोड़े को कौन सा तरीक़ा इख्तियार करना चाहिए
इसे यूँ भी कह सकते हैं कि जिसे सुहागरात कहा जाता है (यानी शबे ज़ुफाफ़) उस का क्या तरीक़ा होना चाहिए और फिर उस के इलावा सोहबत करने में किन बातों को ज़हन में रखना ज़रूरी है।

सुहागरात (शबे ज़ुफाफ़) में लड़के और लड़की दोनों में डर, हेसिटेशन, हिचकिचाहट और एक घबराहट का होना आम बात है और ये भी होता है कि कुछ लोग बिल्कुल नहीं डरते।

डरने वाला मामला अक्सर अरेंज मेरिज में होता है क्योंकि लड़का और लड़की एक दूसरे से अंजान होते हैं (मतलब ज़्यादा जान पहचान नहीं होती) तो दोनों ही एक

दूसरे से मानूस होने में वक़्त के मुहताज होते हैं और कुछ लोग इस में भी पहली रात को ही इस तरीक़े से बात चीत करते हैं जैसे कोई मस'अला ही नहीं है।

अब एक है लव मेरिज जिस में लड़का लड़की दोनों शादी से पहले ही एक दूसरे से अच्छी तरह वाक़िफ़ होते हैं।
अरेंज में भी अब ऐसा होने लगा है कि शादी से महीनों पहले से फोन पर बातें शुरू हो जाती हैं और आज कल तो सोशल मीडिया एप्लीकेशन के ज़रिये वीडियो कॉलिंग, चेटिंग और फोटो का आना जाना लगा रहता है जिस की वजह से शादी की पहली रात अस्ली अरेंज मेरिज जैसी नहीं होती।

लव मेरिज ऐसी भी हो सकती है कि एक नज़र में प्यार हुआ और फौरन निकाह हो गया तो ये भी अरेंज की तरह होता है कि दोनों एक दूसरे से बहुत ज़्यादा वाक़िफ़ नहीं होते।

हम यहाँ इस की तफ़सील में नहीं जायेंगे कि लव और अरेंज में क्या अच्छा और क्या बुरा है लेकिन इतना ज़रूर कहेन्गे कि अरेंज मेरिज ही बेहतर है और लव मेरिज वो बेहतर है जिस में प्यार होते ही निकाह कर किया जाये।

प्यार होने के बाद प्रपोस करना, मिलना, बातें करना, तोहफ़े देना और घूमने फिरने फिर लास्ट में भाग जाने का जो प्रोसेस है वो बिल्कुल गलत है, ऐसा करने वाले खुश नहीं रहते और इसी तरह अरेंज मेरिज में शादी होने से पहले फोन पर बातें, चेटिंग, घूमना फिरना और बाज़ अवक़ात पहले ही रिलेशन बना लेने का जो प्रोसेस है वो भी बिल्कुल गलत है, ऐसा करने वाले भी अच्छे नहीं हैं।

सिम्पल ये जान लें कि या तो अरेंज करें यानी अस्ली अरेंज या फिर असली लव मेरिज यानी प्यार हुआ और निकाह। अब चलते हैं वापस पहली रात की तरफ के इस स्टेज को पार किस तरह किया जाये कि मियाँ बीवी में मुहब्बत बढ़े और दोनों एक दूसरे के बारे में बदगुमानी से बच जायें।

सबसे पहले लड़कों को चाहिये कि सुकून और अदब से काम लें क्योंकि जल्दी का काम शैतान का होता है।
सुहागरात में जब आप कमरे में दाखिल हों तो अपनी बीवी को सलाम करें और अगर वो कर दे तो जवाब दें (वैसे लड़के को पहले करने का ज़्यादा मौक़ा मिलता है।)

सलाम करने से ये ना सोचें कि आप की इज़्ज़त उसकी नज़र में कम हो जायेगी या आप की वेल्यू गिर जायेगी।
जो ऐसा समझते हैं कि मै मर्द हूँ, मै आक़ा हूँ यो मै क्यों सलाम करूँ! उन्हें जान लेना चाहिये कि सलाम करने से कोई छोटा या बड़ा नही हो जाता बल्कि इस से इज़्ज़त मज़ीद बढ़ जाती है।

पहली रात में बीवी को सलाम करने या उस के सलाम का जवाब देने के बाद उस के पास बैठ जायें।
उस से खैरियत पूछें और फिर कुछ बातें करें।
अब हो सकता है कि कोई सोचे कि क्या बात करनी है तो ये जान लीजिये कि पहली रात में कही गयी बातों का बीवी पर बहुत असर पड़ता है और उस दिन जितनी गौर और सुकून के साथ वो आप की बातें सुनती है, शायद ज़िंदगी में वैसा मौक़ा मिले।

आपको सबसे पहले अपने बारे में बताना ज़रूरी है लेकिन इसका ये मतलब नहीं कि आप अपनी पूरी ज़िंदगी की किताब खोल कर बैठ जायें।
हमने बताया कि पहली रात में कही गयी बातों से आप की शख्सियत (Personality) ज़ाहिर होती है और बीवी की नज़र में आप के किरदार की एक तस्वीर बनती है, अब आप की बातें जैसी होगी वैसी तस्वीर बनेगी।

ख्याल रहे कि ये बातें हम उनके लिये कर रहे हैं जो निकाह से पहले लड़की से किसी तरह बार नहीं करते और पहली रात को एक दूसरे के लिये अजनबी जैसे होते हैं वरना

जो बात करते हैं वो तो अपनी शख्सियत पहले ही बयान कर चुके होते हैं तो उन्हें अब ज़्यादा बताने की क्या ज़रूरत है।

अपने बारे में बताते हुये पहले आगाज़ इस तरह करें कि:

कहने को तो बहुत कुछ है पर समझ नहीं आता कहाँ से शुरू करूं और खत्म कहाँ खत्म।
मै चाहता हूँ कि आप को अपने बारे मे कुछ ज़रूरी बातें बताऊँ (फिर थोड़ा सा रुकें) (फिर कहें) मै भी दूसरे लड़कों की तरह सोचा करता था कि मेरी बीवी कैसी होगी, कहाँ होगी और आज वो दिन आ गया है कि आप मेरे सामने हैं।
अल्लाह त'आला का शुक्र है कि उस ने ये दिन दिखाया।

ये एक आइडिया है जो हम आप को दे रहे हैं वरना आप अपने हिसाब से जो बेहतर लगे उस तरह गुफ्तगू कर सकते हैं।

अपने बारे में बीवी को बताते हुए फिर अपने वालिदैन की तरफ जाएं और बीवी को कुछ नसीहत करें ताकि उसे महसूस हो की आप किस कदर अपने वालिदैन से मुहब्बत करते है ख्याल रहे कि बात को इस लहज़े में न करें कि आप गुज़ारिश कर करे हैं या इस तरह भी ना करें कि आप उसे डरा धमका रहे है बल्कि प्यार से अपनी बात को मियाना रवि के साथ बयान करें

एक तरीका ये भी हो सकता है कि खैरियत पूछने के बाद कहें कि "मुझे अपना हाथ दें" या बिना कहे आराम से उसके हाथ को अपने हाथ पर रख कर उस पर दूसरा हाथ रख लें और फिर गुफ़्तगू शुरू करें कि "बाते बहुत सी हैं जो आप से करनी हैं पर समझ नहीं आता कि शुरू कहाँ से करूँ और खत्म कहाँ पर" ये कहने के बाद आप को फिर वहीं आ जाना है जो हमने पिछे बयान किया

फिर मां बाप के बारे में बताते हुए यूँ कहें की मेरे वालिदैन ने बड़ी मेहनत से मुझे पाला पोसा पढ़ाया लिखाया है यानी आपको अपने वालिदैन की कुरबानियों का

ज़िक्र करना है फिर उस के बाद नसीहत करनी है कि मेरे वालिदैन अब आप के लिए भी वालिदैन की तरह हैं, उन से अच्छी तरह पेश आएं, अगर वो आप को अपनी बेटी समझ कर कभी दो लफ्ज़ कहे दें तो जवाब ना दें बल्कि सब्र करें और उनकी ताज़ीम करें

जब आप पहली रात अपनी बीवी को अपने वालिदैन के बारे में बता कर नसीहत करेगे तो इसका बहुत गहरा असर पड़ेगा।
फिर आप बीवी को अल्लाह त'आला के हुक़ूक़ के बारे में नसीहत करें के :

"ये दुनिया मंज़िल नहीं बल्कि सफर है जिस में किये गए आमाल हमारे साथ आख़िरत में जाएंगे, मैं चाहता हूं की आप शरीअत को सब से पहले रखें और अगर मैं भी कभी गैर शरई काम करता नज़र आऊं तो आप मेरी इस्लाह करें।
अगर आपने कभी मुझे दो चार बातें कह दी या मुझे तकलीफ पहुचाई तो मैं माफ कर सकता हूँ पर ग़ैर शरई बातो के लिए मैं रियायत नहीं कर सकता"

ये कहने से बहुत फायदा होगा
आईन्दा आप और आपकी बीवी को ये बातें याद रहेगी
इन बातों में आप अपने मुताबिक़ कमी बेशी कर सकते है पर मक़सद है पहले अपने बारे में बताना, फिर वालिदैन फिर हुक़ूक़ुल्लाह के मुताल्लिक़ नसीहत करना
ऐसा शायद ही आज कल नौजवान करते होंगे।

कुछ तो ऐसे नौजवान हैं के शेरो शायरी याद कर के जाते हैं या फ़ुज़ूल के फिल्मी जुमले याद कर के बकना शुरू कर देते है जिससे बीवी ये समझती है के बस शादी का मक़सद रोमांस से शुरू हो कर जिस्म पर खत्म हो जाता है।

पहली रात में ही कई नौजवान ये ज़ाहिर कर देते है की बस उन्हें जिस्मानी ख्वाइश पूरी करनी थी अगर्चे वो ऐसा ज़ाहिर न भी करना चाहते हो पर अपनी हरकतों से कर देते है।

बीवी को ये लगना चाहिए के शौहर सिर्फ मेरे जिस्म से नहीं बल्कि मेरे वुजूद से मुहब्बत करता है, मुझे अपना समझता है और मुझे खुशियां देना चाहता है।
हमने जो बयान किया इस में ये भी शामिल किया जा सकता है के पहली रात को कोई एक तोहफा ले कर जाएं क्योंकि इससे मुहब्बत बढ़ती है।
सलाम कर के बैठे और खैरियत दरियाफ्त करने के बाद हाथो में तोहफा दें और फिर हाथो में हाथ रख कर बातें करें जो हमने बयान की।

हमने बताया के पहेली रात में बीवी को हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक उल इबाद के मुताल्लिक़ नसीहत करें,
शरीअत पर अमल की तरग़ीब दें या थोड़ी इल्मी और इस्लाही बातें करें तो ये उनके लिए है जो शरई तरीके से निकाह करते हैं वरना अगर किसी ने गाने बजाने और नाजायज़ रस्मो रिवाज के साथ निकाह किया है तो उसके लिए ये सब बातें कहना मज़ाक़ करने के बराबर होगा।

आपने नक़दी, जहेज़ ले कर निकाह किया, बाजे बजाए, आतिशबाज़ी की, फ़ुज़ूल खर्ची की और बेपर्दगी को नज़र अंदाज़ किया फिर पहेली रात में बीवी के सामने ये बातें बिल्कुल मैच (Match) नही करेंगी।
अगर आप ने शरई तरीके से निकाह न कर के खुराफ़ात को गले लगाया है तो अब आप की जान छूटने नहीं वाली क्योंकि आप अपनी शख्सियत ज़ाहिर कर चुके हैं।
ये तरीका जो हम बयान कर रहे हैं, ये तभी मैच करेंगा जब आप शरई तरीके से निकाह करेंगे और ये भी ज़रूरी है के निकाह से पहले भी आपने लड़की से मुलाक़ातें और बातें ना कि हो।

अब बारी आती है बीवी के साथ नमाज़ पढ़ने और उसके बालो को पकड़ कर दुआ पढ़ने की तो आपको दुआ याद रखनी है ताकि देख कर पढ़ने की नौबत ना आये और नमाज़ के लिए तहारत भी ज़रूरी है लिहाज़ा इसे पहले ज़हन में रखें फिर शौहर बीवी से कहे के आइये हम अल्लाह त'आला का शुक्र अदा करने के लिए दो रकाअत

नमाज़ पढ़ते हैं उसके बाद वुज़ू करें फिर दो रकाअत नमाज़ शुक्राने की निय्यत से पढ़ें।
ये नमाज़ एक रिवायत के मुताबिक शौहर और बीवी के दरमियान मुहब्बत में इजाफे का सबब भी बनेंगी (इन्शा अल्लाह)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मस'उद से एक शख़्स ने अर्ज़ किया के मैंने एक जवान लड़की से निकाह किया है पर मुझे अंदेशा है के वो मुझे पसंद नही करेंगी तो आप ने फरमाया के मुहब्बत उल्फत अल्लाह की तरफ से है और नफरत शैतान की तरफ से लिहाज़ा जब तुम अपनी बीवी के पास जाओ तो सब से पहले उससे कहो कि तुम्हारे पीछे दो रकाअत नमाज़ पढ़े, इन्शा अल्लाह तुम उसे मुहब्बत करने वाली और वफ़ा करने वाली पाओगे

(غنیۃ الطالبین)

नमाज़ के बाद जब बिस्तर पर जाए तो शौहर के लिए एक खास दुआ का ज़िक्र हदीस में मिलता है जिसे पढ़ने का तरीका ये है कि बीवी की पेशानी (आगे सर) के थोड़े से बाल अपने दाएं हाथ से पकड़े और दुआ पढ़े
ख्याल रहे के पहले बीवी को ये बता दें के हदीस में आया है के शादी की पहेली रात शौहर अपनी बीवी की पेशानी के बाल पकड़ कर दुआ करे वरना होगा ये के अगर उसे इस का इल्म ना हुआ तो ये भी समझ सकती है के आप उसे अपना गुलाम बनाने के लिए झाड़ फूंक कर रहे हैं।

अगर उसे इल्म हो तो भी बता दें वरना इस तरह बिना बताए अचानक बाल पकड़ने से हो सकता है वो अजीब महेसुस करे।
बाल पकड़ने का मतलब ये नहीं है कि बहुत ज़्यादा बाल पकड़े जाएं बल्कि थोड़े से बालों को हाथो से पकड़ कर दुआ पढ़नी हैं।

दुल्हन के बालों को पकड़ कर दूल्हा ये दुआ पढ़े

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَمِنْ شَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ

इस दुआ का ज़िक्र अबु दावूद (2160) में है और इस का तर्जुमा ये है कि :

"ए अल्लाह मैं तुझ से इसकी (अपनी बीवी की) भलाई और खैरो बरकत मांगता हूं और इस कि फ़ितरी आदतों की भलाई चाहता हूँ और पनाह चाहता हूँ इसके अख़लाक़ व आदात के शर से"

इस दुआ की बरकत से भी मियां बीवी के दरमियान मुहब्बत में इज़ाफ़ा होगा
इस दुआ को पढने के बाद बिस्मिल्लाह शरीफ पढें और फिर अपनी बीवी के दोनों रुख़सारो पर हाथ रखें के उंगलिया कानो पर हो और पेशानी को बोसा (Kiss) दें
कहा जाता है के इंसान के किये गए हर अमल से कोई ना कोई फर्क पड़ता है और कभी कभी छोटी छोटी बातें बडा असर करती हैं तो ये पेशानी को बोसा देना आपके नज़दीक़ उसकी अहमियत और मुहब्बत को ज़ाहिर करता है और इससे एक फायदा ये है कि लड़की महसूस करती है कि आप उस का खयाल (Care) करते हैं फिर ये भी है कि आगाज़ एक ऐसे तरीके से होता है जो अच्छा मालूम होता है वरना जल्दबाज़ी में सीधे जिमा की कोशिश सहीह नहीं है।

पेशानी को बोसा देने के बाद अपना चहेरा बिल्कुल उसके चहेरे के मुक़ाबिल लाएं और फिर बोसो की किनार (Kiss & Seduce) करें यानी लिपटना और बोसा लेना।

बीवी की साथ जिमा में जल्दी ना करें क्योंकि औरत के अंदर मर्द से ज़्यादा शहवत होती है लिहाज़ा सिर्फ अपनी शहवत को खत्म कर के ये समझना कि औरत की हाजत भी पूरी हो गयी सहीह नही है।

पहले बोसो किनार को कुछ देर जारी रखे ताकि औरत पर भी शहवत का ग़लबा हो जाये और फिर जिमा करे ताकि दोनों को तस्कीन हासिल हो सके।

अब हो सकता है ज़हन में ये सवाल आये की हमें कैसे पता चल सकता है कि औरत भी तैय्यार हो चुकी है तो किताबो में जिस तरह बयान किया गया है तो उसे पढ़ कर आसानी से समझा जा सकता है की जब औरत की सांसें तेज़ हो जाएं फिर उस की आवाज़ और उस के जिस्मानी आज़ा (Body Parts) की हरकत और फिर उस का मर्द को अपनी तरफ खींचना, ये बातें काफी हैं अंदाज़ा लगाने के लिए।

इमाम ग़ज़ाली रहिमहुल्लाहू त'आला ने एक रिवायत नक़ल की है कि मर्द अपनी औरतों पर जानवरों की तरह ना गिरे बल्कि सोहबत से पहले क़ासिद होता है और क़ासिद बोसो किनार है

(کیمیائے سعادت)

बोसो किनार के बाद जब ये लगे कि औरत पर शहवत का ग़लबा हो चुका है तो शर्मगाह खोलें और अपने आले (Penis) को अपनी बीवी के फरज (Vagina) में दाखिल करें और इस में भी जल्दबाज़ी ना करें वरना ये जिमा बजाए ताज़गी और सुकून का सबब बनने के तकलीफ का सबब बन सकता है लिहाज़ा एक दूसरे का ख़याल रखते हुए आहिस्ता से दाखिल करने की कोशिश करें फिर हरकत दें।

एक दुआ हम ने बयान की जिसे सिर्फ पहली रात पढ़ना है और एक दुआ ये है जिसे जिमा से पहले पढ़ना है और जब भी सोहबत करें, ये दुआ पढ़ें

بِسْمِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبْ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

(ابو داؤد: 2161)

"अल्लाह के नाम से शुरु, ए अल्लाह हम को शैतान से बचा और उस औलाद को भी हो तो हमें अता करें"

(बुखारी, अबु दावूद, मुस्लिम)

इस दुआ की बरकत से पैदा होने वाली औलाद को शैतान नुकसान नहीं पहुचा सकेंगा

उलमा ने इस कि शरह में ये भी लिखा है के अगर कोई ये दुआ ना पढ़े तो पैदा होने वाली औलाद ना फरमान, बुरी खसलतों वाली और बेगैरत पैदा होती है

ये भी किताबों में मौजूद है के अगर ये दुआ ना पढ़ें तो शैतान शर्मगाह से लिपट जाता है और फिर इसी को असर आने वाली नस्लों पर पड़ता है, ये दुआ पढ़ना को बहुत बड़ा काम नहीं है पर इसे ना पढ़ने से जिन नुक़सानात का ज़िक्र किया गया है वो वाक़ई बहुत बड़े है लिहाज़ा शादी से पहले ज़रूरी है के इस दुआ को और दूसरी दुआओ को और ज़रूरी मसाइल को सीखें

अब एक बात आती है के जिमा करते वक़्त कैफियत क्या होनी चाहिए खड़े हो कर या बैठ कर या लेट कर या फिर किसी और कैफियत पर तो जान लीजिए इस मे से किसी को भी नाजायेज़ो हराम क़रार नहीं दिया गया हैं
ये ज़रूर है के इन में से बाज़ सूरतें जिस्मानी तौर पर नुक़सानदेह साबित हो सकती है कभी कभी जाएज़ चीजों से भी परहेज़ किया जाता है लिहाज़ा अगर्चे इन में कोई तरीका नाजायेज़ो हराम नहीं पर बेहतर ये है कि लेट कर जिमा किया जाये और इस मे कैफियत ये हो के औरत चित (पीठ के बल चेहरे आसमान की तरफ कर ले) लेटी हो और मर्द उसे ऊपर से ढाँप ले फिर औरत की आगे की शर्मगाह में अपने आले को दाखिल करें

सेक्स पोजीशन (Sex Position)

ये भी अहम टॉपिक है कि जिमा करते वक़्त कैफ़ियत कैसी होनी चाहिये यानी किस हालत में जिमा किया जाये।
हम पहले ही बयान कर चुके हैं कि इस में खड़े हो कर, बैठ कर, लेट कर या करवट वग़ैरह पर करना कोई भी तरीक़ा नाजाइज़ो हराम नहीं है पर दो बातें जान लेना ज़रूरी है :
(1) ऐसी कैफ़ियत ना हो कि किसी को तकलीफ़ हो।
(2) ऐसी कैफ़ियत ना हो कि जिस से तबियत और सिह्हत पर मनफ़ी असरात (Side Effects) मुरत्तब हों।

अब अगर देखा जाये तो सब से बेहतर तरीक़ा य है कि औरत चित (चेहरा आसमान की तरफ कर के) लेटी हो और मर्द उस के ऊपर पट (यानी चेहरा उस की तरफ़ कर के) लेटा हो और उसे ढाँप ले और फिर औरत की टाँगें हल्की उठी हुयी हो तो ये तरीक़ा सबसे बेहतर है।
ये तरीक़ा फितरी (Natural) भी है, तमाम हैवानात भी इस तरीक़े को अपनाते हैं फिर क़ुरआने पाक की एक आयत कि "मर्द ने जब औरत को ढाँप लिया तो उस को हमल रह गया" भी इस पोजीशन की तरफ इशारा करती है।

इस तरीक़े में एक फाइदा ये है कि औरतों को ज़्यादा मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती और जब उस पर मर्द का वज़न पड़ता है तो उसे लज़्ज़त हासिल होती है।

इसके इलावा जो तरीक़े हैं उन में कुछ ना कुछ नुक़सान है मस्लन एक तरीक़ा ये है जिसे सब से बुरा लिखा गया है कि मर्द चित लेटा हो और औरत उस के ऊपर बैठे तो इस में जब मनी खारिज होगी तक वो वापस मर्द की शर्मगाह की तरफ आयेगी और ये बीमारियों का सबब बनेगी। अगर जिमा (Sex) करने के लिए कोई और कैफ़ियत (Position) अपनायी जाए तो वो हया के खिलाफ होंगी मसलन अगर खड़े खड़े किया जाए तो पर्दे के एहतेमाम अच्छी तरह नही हो सकेगा।

लेट कर जो तरीका बयान किया गया उस मे एक चादर ऊपर से ओढ़ ली जाए तो पर्दा भी हो जाएगा और यही हया का तकाज़ा है वरना जानवरो की तरह बिल्कुल बरहना (नंगे) हो कर जिमा करना सहीह नहीं है।

हदीस में भी सोहबत के वक़्त कपड़े से पर्दा करने का हुक्म दिया गया है और आलाहज़रत लिखते है के अगर बरहना सोहबत की जाए तो अवलाद के बे हया पैदा जो के का खौफ़ है।

(فتاوی رضویہ، ج9، ص46)

जो पढ़े लिखे दीनदार लोग हैं वो कभी ये पसंद नहीं करेंगे के बरहना जिमा किया जाए या खड़े खड़े जिमा किया जाए।

ये तो आज कल नौजवानों में फिल्मों ड्रामों का असर है के लड़के तो लड़के अब लड़कियों में भी हया नाम की चीज़ नहीं दिखती।

पहेले ज़माने के लोग अगर्चे कम पढ़े लिखे होते थे पर वो बजी बरहना या खड़े खड़े सोहबत करने को अच्छा नहीं समझते थे।

सेक्स टाइम (जिमा के लिए वक़्त)

जिमा (Sex) के लिए कोई वक़्त मुक़र्रर नही किया गया है यानी जब सहूलत हो तब कर सकते हैं।
सहूलत का मतलब ये कि पर्दे का एहतिमाम अच्छी तरह हो सके और जिमा के बाद ग़ुस्ल वग़ैरह का इंतिज़ाम हो ताकि कोई नमाज़ क़ज़ा ना हो।

बेशतर लोग रात को ही पसंद करते है और बेहतर भी यही है।
रात में जिमा के लिए दुरुस्त वक़्त रात का आखिरी हिस्सा है।
रात के शुरू हिस्से में पेट भरा हुआ होता है और ऐसे में जिमा करना अच्छा नहीं है रात के शुरू हिस्से में जिमा करने के बाद पूरी रात नापाकी की हालत में सोना पड़ सकता है और ये भी अच्छा नहीं है लिहाज़ा बेहतर है कि रात के आखिरी हिस्से में जिमा किया जाये।

आज कल ग़ुस्ल खाने (Bathrooms) कमरो से जुड़े हुए (Attached) बनाये जाते हैं और साथ में ऐसे आलात निकल गये हैं कि बस उंगली रखते ही गर्म ठंडा हर तरह का पानी मिनटों में हाज़िर हो जाता है तो रात में ग़ुस्ल करने में कोई परेशानी नहीं है लिहाज़ा ऐसे में रात को जिमा करना ही बेहतर है और अगर ऐसा हो कि जिमा के बाद ग़ुस्ल का इंतिज़ाम ना हो और फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो जाये तो ये दुरुस्त नहीं और ऐसी सूरत में जिमा के लिये कोई दूसरा वक़्त अपनाया जाये मस्लन फ़ज्र के बाद या दिन में ताकि नमाज़ क़ज़ा ना हो।

अगर ठंड का मौसम है और मालूम है कि रात में जिमा के बाद फ़ज्र के वक़्त गुस्ल का इन्तिज़ाम ना हो सकेगा तो ऐसे में नमाज़ क़ज़ा करना जाइज़ नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि दिन में जिमा करें।

जिमा के बाद बीवी से फौरन अलग हो जाना दुरुस्त नहीं है।
जब मर्द की मनी औरत की शर्मगाह में गिरती है तो उसे लज़्ज़त हासिल होती है।

मनी के निकलने के बाद भी थोड़ी देर तक अलग नहीं होना चाहिये ताकि औरत भी अपनी हाजत पूरी कर ले।
सिर्फ अपनी शहवत को खत्म कर लेना और अलग हो जाना बीवी को चिड़चिड़ा बना देता है।
वो अगर्चे बयान ना करे पर उसे इस से तकलीफ़ होती है।

इमाम गज़ाली एक रिवायत नक़्ल करते हैं कि मर्द की कमज़ोरी की ये निशानी है कि बिना बोसो किनार (Without Kiss And Seducing) जिमा करने लगे और जब इंज़ाल हो जाये (यानी मनी निकल जाये) तो सब्र ना कर सके और फौरन अलग हो जाये कि इस से औरत की हाजत पूरी नहीं होती।

अगर पहली रात हो और शौहर जिमा के बाद फौरन अलग हो जाये तो ज़ाहिर सी बात है कि औरत अपने आप को अकेला और अजनबी जैसा महसूस कर सकती है।

शौहर और बीवी का रिश्ता बड़ा प्यारा रिश्ता है लिहाज़ा हर मामले में एक दूसरे का ख्याल रखना चाहिये।
जिमा के मामले में भी एक दूसरे की हाजत को समझना चाहिये।
अगर शौहर अपनी बीवी को बुलाये तो उसे इंकार नहीं करना चाहिये और बीवी की हाजत का भी ख्याल रखना चाहिये, ऐसा ना करें कि इबादत और दूसरे कामों में मसरूफ़ रहें और इधर बीवी अपनी ख्वाहिश को अपने अंदर दबा कर ज़िंदगी गुज़ार रही हो।

जिमा कितने दिनों पर करें?

ये मौज़ू भी अहम है कि जिमा (Sex) कितने वक्फ़े के बाद किया जाये।
आसानी से समझें तो कोई भी चीज़ ना ज़्यादा कम अच्छी है और ना बहुत ज़्यादा यानी बीच में रहना चाहिये।

अब नई-नई शादी के बाद अक्सर नौजवानों में चूँकि जज़्बात ज़्यादा होते हैं तो रोज़ाना बल्कि एक ही दिन में दो तीन मर्तबा जिमा करते हैं जो कि सहीह नही हैं, इसके कई नुक़्सानात हैं।

मनी का निकलना जिस्म से ज़रूरी है पर ज़्यादा निकलना नुक़्सानदेह है।
इसे रौग़ने हयात कहा जाता है यानी ज़िन्दगी की शम्मा इसी से रौशन है।
इसके निकलने से जो कमज़ोरी महसूस होती है उससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि कसरत से निकलने से जिस्म पर क्या असरात पड़ सकते हैं।

कसरत से जिमा करने वालों को कई बीमारियों और साथ ही साथ तहारत के मसाइल से भी दो चार होना पड़ता है यानी जब कोई कसरत से जिमा करता है तो पाकी नापाकी में शुब्हा (Confused) होता है और कमज़ोरी के साथ साथ कई बीमारियाँ उसके गले पड़ जाती हैं।
दिमाग़ का कमज़ोर होना, घुटनों और जोड़ों का दर्द, जिस्मानी कमज़ोरी, आँखों का कमज़ोर हो जाना और भी कई तरह की परेशानियाँ सामने आती हैं।

हर किसी के लिए एक जैसा वक़्त तय नहीं किया जा सकता एक हफ्ते में एक दिन जिमा करना करना चाहिए या 10 दिन के बाद या 15 या 20 बल्कि हर इंसान की तबियत, उसकी शहवत और जिस्मानी क़ुव्वत अलग अलग है लिहाज़ा इस में हर किसी को चाहिये कि अपने हिसाब से अंदाज़ा लगाये।

इस में औरत की ख्वाहिश को भी मद्दे नज़र रखना होगा मतलब ऐसा ना हो कि आप को जिमा की ख्वाहिश नहीं पर शायद औरत को हो तो अगर आप ऐसी सूरत में

जिमा ना करें तो ये औरत के साथ ना-इंसाफी होंगी बल्कि बाज़ अवकात इसी वजह से औरत की नज़र दूसरो की तरफ उठती है।

हाँ इस का खयाल ज़रूर रखें कि ज़रूरत से ज़्यादा जिमा ना करें क्योंकि इसके कई नुक़्सानात हैं।

वो कहते हैं के किसी हकीम से सवाल हुआ कि औरत के पास साल में कितनी मर्तबा जाना चाहिए तो जवाब मिला कि एक मर्तबा!

पूछने वाले नौजवान ने कहा कि ये तो सब्र से बाहर है फिर जवाब मिला कि 6 महीने में एक बार तो कहा कि ये भी बड़ा मुश्किल है
फिर जवाब मिला कि ये मौत का कुँआ है लिहाज़ा जब चाहे छलांग लगा लो।

एक और हकीम से सवाल हुआ कि हफ्ते में कितनी मर्तबा जिमा किया जाए?
कहा कि एक हफ्ते में बस एक बार तो पूछने वाले ने कहा कि एक क्यों? इससे ज़्यादा क्यों नहीं?
हकीम ने झुंझला कर जवाब दिया कि तुम्हारी ज़िन्दगी है तुम समझो, मुझसे क्या पूछते हो

इसी तरह एक और हकीम का जवाब इस तरह मिलता है कि अगर एक हफ्ते में भी एक बार से ज़्यादा जिमा करना है तो सर पर कफन बांध लो!

वाक़ई कसरत से जिमा करना इंसान को बूढ़ा बना देता है लिहाज़ा ज़रूरत हो तो किया जाये वरना इसे ओढ़ना बिछौना ना बनाया जाये।

जुमेरात को जिमा करना बेहतर है और इसे मुस्तहब भी लिखा गया है बाक़ी किसी दिन भी कर सकते हैं अ़स्लन कोई हर्ज नहीं।

अगर कोई एक ही रात में एक से ज़्यादा मर्तबा जिमा करना चाहता है तो चाहिये कि बीच मे इतना वक़्फ़ा रखे कि जिस्म की हरारत (Temperature) अपनी

(Normal) हालत में आ जाये वरना तुरंत दोबारा जिमा करना सेहत के लिये नुक़्सान देह है।

बीमारी की हालत में भी जिमा से बचना चाहिए जैसे खाँसी, बुखार वग़ैरह हो तो ठीक होने तक जिमा ना किया जाये।

मआज़ अल्लाह नशे की हालत में जिमा किया तो बीवी से नफ़रत और औलाद के अपाहिज पैदा होने का अंदेशा है।

उलमा लिखते हैं कि अगर एक रात में ही दोबारा जिमा करना हो तो दोनों को चाहिये कि वुज़ू कर लें या वुज़ू ना करें तो शर्मगाह को धो कर अच्छी तरह साफ कर लें।

जिमा के दरमियान वक्फ़े के ताल्लुक़ से जान लें कि हफ्ते में दो बार से ज़्यादा हरगिज़ ना करें और बस एक बार में इक्तिफ़ा करें तो बेहतर है।

शेर जो जंगल का राजा कहलाता है और उसके सामने दूसरे जानवर दुम नही मार सकते तो उसकी ताक़त का एक राज़ ये है कि वो साल में शेरनी के पास जाता है और जिमा के बाद दो दिनों तक आराम करता है फिर चलता है तो लड़खड़ाता है, इस से अंदाज़ लगाइये की कसरत से जिमा करना कितना कमज़ोर कर सकता है।

इमाम सुयूती लिखते है कि कसरत से जिमा करना अज़ीम ज़रर का बाइस है।

जिमा (Sex) के वक़्त रौशनी (Light)

जिमा के वक़्त ज़्यादा रौशनी का होना अच्छा नहीं है।
मस्लन आज कल जिस तरह के आलात रौशनी के लिए आ गये हैं कि रात के अंधेरे में भी दिन जैसी रौशनी कर देते हैं तो जिमा के वक़्त इनका इस्तिमाल सही नहीं है। इस में एक खराबी तो ये है कि ये हया के खिलाफ़ है यानी जब ज़्यादा रौशनी होगी तो पर्दा ज़्यादा नहीं होगा और दूसरी बात ये है कि इंसानी फितरत है की "हर नई चीज लज़ीज़ होती है" तो मुम्किन है कि ज़्यादा रौशनी में बरहना एक दूसरे को देखने से ये लज़्ज़त आगे कम पड़े तो ये भी नुक़्सान का बाइस बन सकता है।

आज कल 4 शादियों का रिवाज भी आम नहीं तो फिर इस तरह रौशनी में बरहना जिमा करना आगे चलकर मआज़ अल्लाह बद-निगाही की तरफ ना ले जाये लिहाज़ा जितनी कम रौशनी हो उतना अच्छा है।

अब अगर बात करें हुक्म की तो बीवी के जिस्म के किसी भी हिस्से को देखना और छूना जाइज़ है और इसी तरह बीवी के लिये शौहर का जिस्म के किसी भी हिस्से को देखना और छूना जाइज़ है।

बेहतर यही है कि रौशनी बिल्कुल कम हो और पुराने ज़माने के लोग भी इसी को पसंद करते थे जैसा कि ज़ाहिर है।
ये तो आज-कल गंदी फिल्मों और वेब सीरीज़ वग़ैरह ने अजीब-अजीब तरीक़े नौजवानों को सिखा दिया हैं जिनके मुतल्लिक़ सवालात आते रहते हैं।

जिमा (Sex) के दरमियान बातें

ये आम समझ में आने वाली बात है कि जिमा करते हुये बातें करना सहीह नहीं है मतलब बात करने का मौक़ा और महल होता है जिमा के वक़्त गैर ज़रूरी और और फहश बातें करना बे हयाई है।

जरूरत के तहत कुछ कहना हो तो कह सकते हैं मगर कहानी लेकर बैठ जाना एक अजीब हरकत है।
जिमा के दरमियान बातें करने वालों के बारे में लिखा गया है कि उनकी औलाद के गूंगे होने का अंदेशा है लिहाज़ा। परहेज़ करना चाहिये।

शहवत की हालत में, ग़ुस्से की हालत में, नशे की हालत में इंसान की अ़क्ल अपने अ़स्ली (Normal) हालत में नहीं होती बल्कि एक अलग कैफ़ियत होती है और एक जुनून होता है तो ऐसे में की गई बातें अक्सर बे मतलब की होती है जो इंसान के वकार को गिरा देती हैं।

जिमा के पहले बातें करना, खेलना, छेड़छाड़ करना और बोसो किनार करना बेहतर है।
फिर जिमा के वक़्त पुर वकार रहना चाहिए या नहीं ऐसी हरकत ना करें जो जल्दबाज़ी या बे-हयाई पर मुश्तमिल हो।

एक मर्द जब शहवत में अपने जज़्बात पर क़ाबू नहीं रख पाता और औरत के सामने ऐसी वैसी हरकतें करता है तो उसका रौब और दबदबा जो एक मर्द का होना चाहिए वो बाक़ी नहीं रह पाता।

औरत क्या करे?

औरत पर वैसे तो हया गालिब रहती है पर आज-कल जिस तरह फैशन आज़ादी, और मस्ती वग़ैरह के नाम पर बे-हयाई को आम किया जा रहा है वो क़ाबिले अफसोस है।

औरत में सबसे खूबसूरत चीज़ उसकी हया है।
अगर वो मआज़ अल्लाह बे-हयाई पर उतर आये तो उसकी इज़्ज़त बाक़ी नहीं रहती और हर जगह रुस्वा होना पड़ता है।

कहते हैं औरत ऐसा बोले के बस शौहर सुन पाये यानी उसकी आवाज़ घर के बाहर तो दूर घर वाले भी जल्दी ना सुनें।

अगर औरतें मर्दों के मुक़ाबिल आने के चक्कर में अपनी हया को बाला-ए-ताक़ रख दें तो फिर उनमें वो खूबसूरती बाक़ी नहीं रहती, उनका हुस्न अगर्चे आसमान छू रहा हो पर खूबसूरती ज़मीन पर आ जाती है।

बताने का मक़्सद ये है कि औरत को चाहिए की हया का दामन ना छोड़े।
पहली रात हो या फिर कोई और वक़्त,
जीमा के वक़्त या आम हालात में, हर जगह औरत को ये ख्याल रखना चाहिए कि वह औरत है, मर्द नहीं और औरतों की तरह रहना ही उसके हक़ में बेहतर है।

बीवी शौहर के बुलाने पर मना ना करे

जहाँ हमने ये बयान किया कि मर्दों को औरत की ख्वाहिश को मद्दे नज़र रखना चाहिये और अगर्चे खुद को ख्वाहिश ना हो फिर भी औरत के साथ जिमा करना चाहिये तो ये भी बयान करना औरतों के लिये ज़रूरी समझते हैं कि अगर्चे औरत को ख्वाहिश ना हो पर मर्द अगर बिस्तर पर बुलाये तो मना नहीं करना चाहिये।

बुखारी शरीफ़ की हदीस है, नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जब मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाये और वो इन्कार कर दे तो सुबह तक फिरिश्ते उस पर लानत करते रहते हैं।
(बुखारी:5193)

इस के बाद वाली रिवायत में है कि फिरिश्ते उस पर लानत करते रहते हैं यहाँ तक कि वो अपने शौहर के पास लौट ना आये।
(बुखारी:5194)

अगर कोई शरई वजह ना हो तो औरत को मना नहीं करना चाहिये।
मर्द को अगर ख्वाहिश है और वो जाइज़ तरीक़े से पूरी करना चाहता है फिर उसे रोका जाये तो मुम्किन है कि वो नाजाइज़ तरीक़े को अपना बैठे और इस का गुनाह उस पर तो होगा पर साथ में औरत भी गुनाहगार होगी जैसा कि हदीस में इरशाद हुआ।

अगर कोई शरई वजह है तो औरत पर लाज़िम है कि मर्द को अपने क़रीब ना आने दे मस्लन हैज़ के अय्याम में सोहबत जाइज़ नहीं।

बस ऐसे ही छोटी-छोटी बातों की वजह से अगर कोई बीवी अपने शौहर को हमबिस्तरी से मना करे तो उस पर फ़िरिश्तों की लानत तो होगी ही साथ में शौहर पर इसका ऐसा असर पड़ सकता है कि वो चिड़चिड़ा हो जाये और फिर मआज़ अल्लाह वो बदनिगाही और ज़िना में मुब्तिला जाये।

पाको हिंद में चार बीवियों का तो नाम ही लेना जुर्म है ऐसे में एक ही बीवी से हर मर्द को अपनी ज़रूरत पूरी करनी पड़ती है और इस में परेशानियों का आना यक़ीनी है।
एक ही बीवी होती है तो उसके नखरे भी ज़्यादा होते हैं कि उसे मालूम होता है कि अगर मैं नहीं तो कौन? पर इस अकड़ में बाज़ औरतें अपने शौहर से हाथ धो बैठती

हैं और ऐसा भी होता है कि शौहर अपनी बीवी के इल्म में लाये बगैर बहुत कुछ कर जाता है।

ये सब बताने का मक़्सद जान लें कि शौहर को मना करना कई नक़्सानात का बाइस बन सकता है।
शौहर को भी चाहिये कि शरई मसाइल को समझते हुये चलें।
अगर एक दूसरे की ज़रूरत को ना समझा जाये तो फिर साथ रहना मुश्किल हो जाता है और फिर लड़ाई झगड़े, ना-इत्तिफाक़ी और फिर तलाक़ तक नौबत आ जाती है।

मुश्तज़नी (Masturbation)

मुश्तज़नी यानी हाथ से मनी निकाल कर तस्कीन हासिल करना।
ये बिल्कुल नाजाइज़ और गुनाह का काम है शहवत का ग़लबा हो तो तस्कीन के लिये शौहर बीवी का रिश्ता बनाया गया है कि जाइज़ तरीके से शहवत को कम किया जा सके।

उम्र पर शादी न होने की वजह से नौजवानों की एक बड़ी तादाद इस में मुलव्विस है!
निकाह को इस क़दर मुश्किल बना दिया गया है कि इस से बचना दौरे हाज़िर में बहुत मुश्किल है।
ऊपर से इंटरनेट के ज़रिये बरहना (नंगी) तस्वीरें और गंदी वीडियोज़ बिल्कुल आम हो चुकी हैं कि कोई भी कहीं से भी डाऊनलोड कर के देखता है फिर शहवत भड़क उठने पर वो कोई ज़रिया तलाश करता है और मुश्तज़नी एक ऐसा ज़रिया नज़र आता है कि बिना ज़्यादा मशक़्क़त उठाये वो अपनी शहवत को कम कर लेता है।

हदीस में ऐसे लोगों पर लानत आयी है जो मुश्तज़नी करते हैं।
उलमा ने इसे हराम लिखा है।
अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन रहीमहुल्लाहु तआला लिखते हैं कि मुश्तज़नी हराम है!

दुर्रे मुख्तार में है कि ये मकरूहे तहरीमी है और हदीस में ऐसा करने वालो को मलऊन कहा गया है।

(وقار الفتاوی، ج1، ص125)

मुश्तज़नी (Masturbation) कब जाइज़ है?

कुछ लोग मुत्लक़न कह देते हैं कि मुश्तज़नी जाइज़ है!
कई लोगों से ऐसा सुनने को मिला कि इस में कोई हर्ज नहीं पर मसअला इस तरह नहीं है।

अ़ल्लामा मुफ्ती मुहम्मद इस्माईल हुसैन नूरानी लिखते हैं कि :
जिस शख्स के पास निकाह करने के वसाइल और क़ुदरत मौजूद हो (यानी निकाह कर सकता हो) तो उसके लिये महज़ हुसूले लज़्ज़त और क़ज़ा -ए- शहवत के लिये मुश्तज़नी करना मकरूहे तहरीमी (हराम के क़रीब गुनाह) है और अगर निकाह करने के अस्बाब और वसाइल मौजूद ना हो या हो पर फ़िल फौर निकाह ना कर सकता हो (यानी कोई रुकावट हो कि निकाह की तरकीब ना बन सके) और दूसरी जानिब शहवत का गलबा भी हो जिस से कामों में खलल आता हो और अगर ऐसी हालत में कोई क़ज़ा -ए- शहवत के लिये मुश्तज़नी करे तो उलमा ने लिखा है कि "उम्मीद है कि उस पर वबाल नहीं होगा।"

शारेह हिदाया, अ़ल्लामा इब्ने हुम्माम लिखते हैं कि :

فان غلبة الشهوة ففعل ارادة تسكينها جاء ان لا يعاقب به

(فتح القدير)

यानी आदमी पर अगर शहवत गालिब हो और वो उसे बुझाने के लिये ऐसा करे तो उम्मीद है कि शरअ़न उस पर गिरफ्त नहीं होगी।

(انوار الفتاوی، ص242)

ख्याल रहे इस में मुश्तज़नी की मुत्लक़न इजाज़त नहीं है कि जो जब चाहे और जितना चाहे करे बल्कि खास सूरत में कहा गया कि उम्मीद है उस पर वबाल ना होगा और इस की मज़ीद तफ़सील हम बयान करेंगे।

हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती वक़ारुद्दीन कादरी रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि :
लेकिन अगर किसी पर शहवत का ऐसा ग़लबा हो कि ज़िना में मुब्तिला होने का अंदेशा हो या शादी ना कर सकता हो या बीवी इतनी दूर हो कि वहाँ जा ना सकता हो ऐसी हालत में (मुश्तज़नी करने पर) उम्मीद है कि ऐसा करने वाले पर कोई वबाल ना होगा।
दुर्रे मुख्तार में हैं :
यानी अगर ज़िना का खौफ हो तो ऐसा करने वाले पर वबाल ना होगा।
शामी वग़ैरह ने भी इस पर काफी बहस की और ये फैसला किया कि अगर गुनाह से बचने के लिये ऐसा करेगा तो गुनाहगार नहीं होगा और अगर लज़्ज़त (मज़े) के लिये करेगा तो गुनाहगार होगा।
(और मजबूरी की जो सूरतें बयान की गई उन में उम्मीद है कि गिरफ्त नहीं होगी)

(وقار الفتاوی، ج1، ص269)

इसी तरह अ़ल्लामा मुफ्ती ज़ुल्फ़िक़ार खान नईमी लिखते हैं कि :

ये बात भी ज़हन नशी रहे कि अगर किसी की शहवत इस हद तक बढ़ जाये कि ज़िना में मुब्तिला होने का खौफ हो तो उलमा ने मुश्तज़नी को जाइज़ क़रार दिया है और फ़रमाया है कि उम्मीद है मुवाखज़ा ना होगा जैसा कि दुर्रे मुख्तार में है :

وکذا الاستمناء بالکف و ان کرہ تحریما لحدیث ناکح الید ملعون ولو خاف الزنا یرجی ان لا وبال علیہ

यानी अगर्चे हाथ से मनी निकालना हदीस के मुताबिक़ ऐसा शख्स मलऊन है पर ज़िना का खौफ हो तो उम्मीद है कि ऐसा करने वाले पर कोई वबाल ना होगा।
इसी के हाशिये में अ़ल्लामा शामी ने लिखा है कि अगर शहवत का ग़लबा हो और ऐसा करे तो उम्मीद है कि अज़ाब नहीं दिया जायेगा।

मज़ीद लिखते है :

सिराज में है कि अगर मुश्तज़नी के ज़रिये हद से बढ़ी हुई और दिल को बहकाने वाली शहवत से तस्कीन मक़सूद हो और वो कुँवारा हो, उसकी कोई बीवी या बांदी ना हो या हो मगर किसी उज़्र के सबब उनसे सोहबत नहीं कर सकता तो फ़क़ीह अबुल्लैस फ़रमाते हैं कि मुझे उम्मीद है कि उस पर कोई वबाल ना होगा।
और रद्दुल मुहतार में है कि अगर शहवत के लिए मुश्तज़नी करे तो गुनाहगार होगा

(انظر: فتاوی اتراکھنڈ، ج1، ص325)

तनवीरुल फ़तावा में है कि बगैर किसी शरई उज़्र के हाथों से मनी निकालना नाजाइज़ व हराम है कि हुज़ूर ﷺ ने ऐसे शख़्स को मलऊन कहा है।

हाँ अगर किसी पर शहवत का ऐसा ग़लबा हो की ज़िना में मुब्तिला होने का अंदेशा हो और शादी करने में कोई रुकावट हो और चाहे शादी शुदा हो पर बीवी से दूर हो या किसी वजह से सोहबत ना कर सकता हो तो ऐसी सूरतो में कभी कभार मुश्तज़नी करेगा तो उम्मीद है फिर गुनहगार ना होगा क्योंकि ये सिर्फ ज़िना जैसे गुनाह से बचने के लिये कर रहा है और अगर मज़े की निय्यत से करेगा तो गुनाहगार होगा।

(تنویر الفتاوی، ص121)

मुश्तज़नी के बारे में खुलासा ये है कि :

(1) ये नाजाइज़ और गुनाह है, ऐसा करने वालो पर हदीस में लानत आयी है।

(2) अगर शहवत ज़्यादा हो,
ज़िना का खौफ हो,
ग़ैरे शादी शुदा हो,
या बीवी हो पर किसी वजह से फायदा नहीं उठा सकता तो इन सूरतो में उलमा ने लिखा है कि अगर करे तो उम्मीद है गुनाहगार नहीं होगा।

(3) मुश्तज़नी करने की यहाँ इजाज़त तो दी गयी है पर जो दो बातें ज़हन में रखें कि जब ज़्यादा ज़रूरत हो तब करें और ये कि यहाँ उम्मीद है गुनाह नहीं होगा (लिहाज़ा निय्यत सिर्फ गुनाह से बचने की हो)

(4) इसका ये मतलब हरगिज़ नहीं है कि रोज़ाना मुश्तज़नी शुरू कर दी जाये, ये हरगिज़ जाइज़ नहीं होगा।

(5) इसका ये मतलब भी नहीं कि मुश्तज़ानी के लिए गंदी तस्वीरें और वीडियो देखी जायें।
ये काम हराम हैं और इस में कोई शक नही लिहाज़ा इसकी इजाज़त हरगिज़ नहीं हो सकती इसे ज़हन में रखें कि आज कल अक्सर ऐसा ही होता है जैसा कि सवालों से मालूम होता है।

(6) बिला वजह सिर्फ़ नाजाइज़ रस्मो रिवाज को बीच में ला कर शादी में ताख़ीर करना और फिर मुश्तज़नी की आदत बना लेना हरगिज़ दुरुस्त नहीं।
निकाह की पूरी कोशिश करें और वाक़ई ना हो तो ये मसअला बयान किया गया है।

(7) इसकी वजह से नमाज़ें क़ज़ा न हो, ये हराम है।

सुरअ़ते इन्ज़ाल (Premature Ejaculation)

मनी का वक़्त से पहले निकल जाना या जल्दी ख़ारिज हो जाना सुरअ़ते इन्ज़ाल कहलाता है।
ये आज कल एक आम मसअला बन चुका है और हर दूसरे मर्द को ऐसा लगता है कि वो अपनी बीवी की ख्वाईश पूरी नहीं कर पाते या जिमा की पूरी लज़्ज़त हासिल करने में ये चीज़ रुकावट बनती है।

सबसे पहले ये समझना ज़रूरी है कि क्या वाक़ई आप को वक़्त से पहले इन्ज़ाल होता है या फिर एक ऐसा ज़हन बन चुका है कि अक्सर लोग ऐसा समझ लेते हैं।

अगर निकाह के बाद पहली रात को आप ऐसा चाहते है कि बहुत देर से इन्ज़ाल हो तो जल्दी होने पर आप को लगेगा आप में कोई कमी है लिहाज़ा पहली बार में बहुत ज़्यादा वक़्त की उम्मीद रखना दुरुस्त नहीं क्योंकि पहली बार में शहवत का ग़लबा ज़्यादा होता है और इसी वजह से मनी का जल्दी निकल जाना आम बात है।

इस का मतलब ये है कि जिमा का वक़्त (Sex Timing) धीरे धीरे बढ़ता है अचानक अगर आप ये चाहे की बहुत ज़्यादा वक़्त मिले तो दुरुस्त नहीं और इस के लिए फिर दवाईयाँ इस्तिमाल करने में बहुत एहतियात की ज़रूरत हैं।

अगर वक़्त की बात करें तो 1-2 मिनिट में मनी का निकल जाना सुरअ़ते इन्ज़ाल हो सकता है और अगर उस से भी पहले निकल जाये तो फिर उस का इलाज ज़रूरी है अगर 3 मिनट से ज़्यादा में इन्ज़ाल होता है तो ये वक़्त कम नहीं और औरत की ख्वाइश भी इस में आराम से पूरी हो सकती है जब कि आपने जिमा से पहले बोसो किनार (Kiss And Seduce) किया हो यानी एक दूसरे को पकड़ना और दबाना और ये कई मिनट्स तक हुआ हो फिर ये 3 मिनट्स या इस से ज़्यादा के बाद इन्ज़ाल हो तो ज़्यादा परेशान होने और अपने ज़हन को एहसासे कमतरी का शिकार होने देना दुरुस्त नहीं है।

ये वक़्त जैसा कि हमने बताया धीरे-धीरे बढ़ता भी है और अगर आप कुछ ग़िज़ाओं का इस्तिमाल करते है तो वो भी फौरी तौर पर असर नहीं करती बल्कि उस में भी वक़्त लगता है।

अगर आप जल्दबाज़ी में कोई क़दम उठाते हैं तो थोड़ी देर के लिये मुम्किन है आपको मुसबत नताइज़ (Positive Results) मिलें पर बाद में इसके मनफ़ी असरात (Side Effects) भी होते हैं लिहाज़ा इस में सब्र की ज़रूरत है।

आप अगर एक रात में दो मर्तबा जिमा करते हैं तो दूसरी मर्तबा में इन्ज़ाल पहले के मुक़ाबिल देर से होगा क्योंकि शहवत पहले में ज़्यादा होती है और इसी से अंदाज़ा लगा लें कि वक़्त के साथ-साथ इस में इज़ाफ़ा होता रहता है जब कि कोई बीमारी ना हो।

हर इंसान अपनी जिस्मानी ताक़त के मुताबिक़ वक़्त लेता है।
किसी को 3-4 मिनट्स में फ़रागत हासिल हो जाती है तो किसी की मनी खारिज होने में 13-15 मिनिट्स भी लग सकते हैं और फिर इस से ज़्यादा के लिये लोग मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दवाईयाँ इस्तिमाल करते हैं।

अगर आप नीम हकीम के चक्कर में फँस गये तो आप को स्पीड, तूफान या लंबी रेस का घोड़ा नामी दवाईयाँ मिल जायेंगी और ये असर अंदाज़ भी होती है यानी आधे घंटे तक भी जिमा किया जा सकता है जैसा कि इंजेक्शन्स और स्प्रे भी आ गये हैं पर इसके कई नुक़्सानात हैं जो बाद में दिखाई देते है

अगर दवाइयों को छोड़ कर आप घरेलू कोई तरीक़ा अपनाते हैं तो नताइज दिखने में काफ़ी वक़्त लगता है।

हम दोनों ऐतबार से बतायेंगे कि कौन सा तरीक़ा ज़्यादा महफ़ूज़ है और किन में नुक़्सानात हो सकते हैं।

पहेले आप ये जान लीजिये कि अगर आप बिना किसी दवाई या किसी इलाज के 3 से 5 मिनट्स तक जिमा कर पाते है तो फिर इनसे परहेज़ करें और ग़िज़ाओ पर तवज्जोह दें और वक़्त के साथ साथ इस मिक़्दार में इज़ाफ़ा होता जायेग।
अगर जल्दी मनी खारिज हो जाती है तो किसी अच्छे और माहिर हक़ीम से राब्ता करें जो अगर्चे आपसे पैसे ले पर अच्छी तरह आप का काम करे
और नहीं तो जो घरेलू इलाज हम बयान करने वाले हैं, इनको आज़मा कर देखें।

बिना दवाई या बिना किसी ग़िज़ा का इस्तिमाल किये भी इसके कई इलाज बयान किये जाते हैं।
नीम हकीम और इंटरनेट के ज़रिये आप को कई इलाज सुनने और पढ़ने को मिलेंगे जिन में से बाज़ तो बड़े अजीबो ग़रीब हैं मस्लन एक मुस्लिम डॉक्टर जिसकी वीडियोज़ हज़ारों लोग देखते हैं उन को सुनना हुआ तो कहने लगे कि इस का आसान इलाज है रोकने की ताक़त को बढ़ाना यानी जब मनी निकलने लगे तो आप उसे रोक सकें फिर इस से होगा ये कि मनी जल्दी नहीं देर से निकलेगी।

अब जब उन्होंने बयान करना शुरू किया कि ये रोकने की ताक़त कैसे बढ़ेगी तो कहते हैं कि जब भी पेशाब करने जायें तो थोड़ा सा करें फिर रोक लें और ऊपर की तरफ खीचें और फिर थोड़ा सा करें फिर रोकें इस तरह अगर महीने भर किया जाये तो असर दिखने लगेगा कि आप मनी को भी निकलते वक़्त रोक सकेंगे।

ये बड़ा अजीब तरीक़ा है जिसका नुक़्सान वाज़ेह नज़र आता है।
पेशाब को इस तरह रोकना हरगिज़ दुरुस्त नहीं है और ये फालतू क़िस्म की वर्ज़िश है जिससे बीमारियाँ पैदा होंगी और कुछ नहीं।
एक डॉक्टर को सुनना हुआ जो कह रहे थे कि मनी को रोकने की ताक़त बढ़ाने के लिये इस तरह वर्ज़िश करें कि अपनी उंगली को पखाने के मक़ाम में दाखिल कर के उसे ऊपर की तरफ खींचने की कोशिश करें!

لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم

ऐसे एक या दो नहीं कई तरीक़े आप को आज कल नीम हकीम और इंटरनेट के ज़रिये मिल जायेंगे जिनका कोई फाइदा नहीं पर नुक़्सान ज़रूर है।
ये सब बताने का मक़्सद है कि इन बातों से बचें वरना फिर आप की शादी शुदा ज़िंदगी तबाह हो सकती है।

अब सवाल आता है कि आखिर जल्दी मनी ना निकले इसके लिये क्या किया जाये? तो कुछ आसान तरीक़े ये हैं :

(1) ख्यालात को और जज़्बात को क़ाबू में रखा जाये यानी हर वक़्त सिर्फ इन्हीं चीज़ों के बारे में सोचना इंसान को हस्सास (Sensitive) बना देता है और मनी जल्दी खारिज हो जाती है।
इसके लिये खुद को कामों में मसरूफ़ रखें और कुंवारों को चाहिये कि शादी से पहले मुश्तज़नी से बचें क्योंकि इस से भी बहुत फ़र्क़ पड़ता है और शादी शुदा कसरते जिमा से बचें यानी ज़रूरत के तहत जिमा करें।

(2) गंदी फिल्में और तस्वीरें देखने से बचें और पूरी कोशिश करें और ये कुँवारे और शादी शुदा दोनों के लिये है इस से इंसान के ज़हन पर असर पड़ता है और मनी के जल्दी खारिज होने का ताल्लुक़ ज़हन से भी है।

(3) एक आसान तरीक़ा है जिसे "स्टॉप एंड स्टार्ट" कहते हैं यानी जिमा करते वक़्त बीच-बीच में रुक जायें ताकि मनी जो निकलने वाली थी वो भी रुक जाये और फिर जिमा करें।

इसे यूँ समझे, जब लगे कि अगर जिमा जारी रखा तो मनी निकल जायेगी तो रुक जायें और बोसो किनार करें फिर थोड़ी हरारत और जुनून में कमी आने के बाद फिर जिमा करें तो मनी देर से खारिज होगी पर इस तरीक़े में क़ाबू पाना थोड़ा मुश्किल होगा और क़ाबू पाने पर भी इस तरीक़े से बहुत ज़्यादा देर मनी को नहीं रोका जा सकता पर फिर भी एक हद तक कामयाब है और आसान है।

इससे औरत की हाजत पूरी करने में भी आसानी होगी और दवाई वग़ैरह से भी बच सकेंगे तो जिनके लिए ये तरीका मुफीद साबित हो जाये उन्हें मज़ीद चक्करो में फसने से बचना चाहिये।

(4) दाढ़ी रखें, जी हां दाढ़ी रखने से इस क़ुव्वत में इज़ाफ़ा होता है और काफी हद्द तक इससे आप फायदा महसूस करेंगे।

(5) अब एक तरीक़ा है दवाइयों का इस्तिमाल इस में एहतिय्यात की सख्त ज़रूरत है।
आज कल ऐसी-ऐसी दवाईयाँ आ गई हैं कि वक़्ती तौर पर आपको अच्छा नतीजा दिखा सकती है और भी बहुत जल्द इस के कई नुक़्सानात हैं।

ऐसे-ऐसे स्प्रे, टेबलेट्स और इंजेक्शन वग़ैरह आ गये हैं कि आधे घंटे तक भी जिमा किया जा सकता है पर इस के साइड इफेक्ट्स और नुक़्सानात से तो हकीमों को भी इंकार नहीं होना चाहिये।

इसीलिये बेहतर ये होगा कि दवाईयों से हत्तल इम्कान यानी जहाँ तक हो सके बचने की कोशिश करें और अगर ऐसा लगता है कि आप औरत की ख्वाहिश को पूरा नहीं कर पाते तो इस के लिये :
बोसो किनार ज़्यादा करें,
फिर रुक-रुक कर जिमा करें और ये जान लें कि इस में वक़्त लगेगा,
और फिर खाने पीने पर तवज्जो दें,
और मनी निकलने के बाद औरत के पास कुछ देर रुके रहें,
और अगर इन के बावजूद भी मनी जल्द निकल आती हो तो फिर किसी अच्छे हकीम से राब्ता करें और दवाईयों का इस्तिमाल करें।

इनके इलावा चंद किताबों में आप को अजीबो गरीब नुख्से मिलेंगे कि लौमड़ी की पूँछ तो नर छछूंदर का चमड़ा,

फुलाँ की पत्ती तो फुलाँ की बत्ती और इसे कमर में बांध लीजिये और इसे सर पे बांध लीजिये.....!
इन सब नुस्खों में पड़ कर मामलों को मुश्किल ना बनाया जाये बल्कि आसानी की तरफ रुजू करें जहाँ नताइज अगर बहुत ज़्यादा अच्छे ना हो तो भी मायूसी हाथ नहीं आयेगी पर इतनी मुश्किलों के बाद नताइज ना दिखने पर ज़हनी मर्ज़ ही काफ़ी होगा।

सेक्स डॉल एंड सेक्स टॉयज़ (Sex Doll And Sex Toys)

कई ऐसी चीज़ें आज कल आम हो रहीं हैं जो फितरत के खिलाफ जाने का दरवाज़ा खोल रही हैं एक मर्द को अगर शहवत का ग़लबा है तो इसके लिए निक़ाह जैसा प्यारा रास्ता मौजूद है और अल्लाह त'आला ने औरतों को बनाया है कि उन से फायदा उठाया जाये पर कुछ लोग बिना किसी शरई उज्र के निकाह में ताख़ीर करते हैं और क़ज़ा -ए- शहवत के लिए नाजाइज़ कामों में पड़ जाते हैं।

कुछ ऐसी चीज़ें बाज़ारों में आज कल आ गयी है जिन्हें लोग जिस्मानी तस्कीन के लिए इस्तिमाल करने लगे हैं, इन में सेक्स डॉल, मस्टरबेटर्स (Masturbators) और ना जाने किस किस तरह की चीज़ें शामिल हैं।

ये सब किसी तरह जाइज़ नहीं है कि मसनूई लड़कियाँ बनाई जायें फिर शर्मगाह की शक्ल के आलात बना कर इन्हें इस्तिमाल किया जाये ये हरगिज़ मुनासिब नहीं और शर्मनाक भी है।

अ़ल्लामा ज़ुल्फ़िक़ार खान साहब नईमी हाफिज़हुल्लाहु त'आला सेक्स डॉल के मुतल्लिक़ फ़तवा तहरीर फ़रमाते हुये लिखते हैं कि इस का इस्तिमाल नाजायज़ है अल्लाह त'आला ने मर्द की तस्कीन के लिये बीवी और बांदी को बनाया है तो मर्द को इन दोनों के इलावा किसी से फ़ायदा उठाना जाइज़ नहीं।

(فتاوی اترا کھنڈ، ج1، ص324)

अल्लाह त'आला मुस्लिम नौजवानों को इन वाहियात चीज़ों से दूर रखें।

नशे की हालत में जिमा (Sex) करना

नशा जैसे कि शराब, टैबलेट्स, इंजेक्शन्स और और भी कई अजीबो ग़रीब नशे बाज़ार में आ गये हैं जिनसे एक इंसान जानवर से भी बदतर बन जाता हैं तो फिर ज़ाहिर सी बात है कि वो इस हालत में किसी के साथ अच्छा सुलूक नही कर सकता। नशा कर के बीवी के पास जाना दो जुर्म हैं

एक तो नशा करना ही नाजाइज़ो ग़ुनाह है ऊपर से इस तरह बीवी के साथ जिमा करना उस पर ज़ुल्म करना हैं क्योंकि नशे की हालत में अच्छे सुलूक की उम्मीद नहीं कि जा सकती।

ऐसे में बीवी को जिस्मानी और ज़हनी दोनो तौर पर तक्लीफ होती है और उसके बरताव में चिड़चिड़ापन आ जाता है और फिर ये ना-इत्तिफाक़ी का सबब बनता है। ये ना इत्तिफाक़ी इस क़दर बढ़ती चली जाती है कि इस का सीधा असर रिश्ते पर पड़ता है और अगर बच्चे मौजूद हैं तो उनकी ज़िन्दगी पर भी इसके मनफ़ी अ़सरात मुरत्तब होते हैं!

नशा ऐसे ही करना घरों को तबाह कर देता हैं फिर नशे में बीवी के साथ जिमा करना बहुत ही बुरी और घिनौनी हरकत है।

अल्लाह त'आला मुस्लिम नौजवानों को इस बला से महफूज़ रखे।

हमल और सेक्स (Pregnancy And Sex)

जब बीवी हामिला हो तो सेक्स करना जाइज़ है, इस में शरीअ़त की तरफ से कोई मनाही नहीं है।
आला हज़रत रहीमहुल्लाहू त'आला लिखते हैं कि (हालाते) हमल में सोहबत जाइज़ है।

انظر: عرفان شریعت، ص55،
فتاوی رضویہ، ج23، ص380

अब एक बात यहाँ ये ज़रूर है कि बीवी की सिह्हत और उसकी हालत का ख्याल रखा जाये।
यानी अगर अय्याम ऐसे हो या हालत ऐसी हो कि उसको तकलीफ़ होगी तो जिमा नहीं करना चाहिये।
अगर बात करें बच्चे को नुक़्सान की तो जिमा करने से बच्चे को नुक़्सान नहीं पहुँचता बशर्ते कि हालत नाज़ुक ना हो
जिमा के दौरान बच्चे तक कोई तकलीफ़ पहुंचना बईद है बल्कि ना के बराबर है।

जिमा करते वक़्त कैफियत का ख्याल रखना इन दिनो में अहम कहा जा सकता है क्योंकि हामिला औरत एक गैर हामिला के मुक़ाबिल कमजोर होती है और कई चीज़ो पर क़ादिर नहीं होती।

ख़ुलासा यही है कि ये जाइज़ है अलबत्ता औरत की हालत और उसकी सिह्हत के मुताबिक़ ही जिमा किया जाये और अगर मुनासिब मालूम ना हो या डॉक्टर्स ने मशवरा दिया हो तो ना करना बेहतर है।

कंडोम्स का इस्तेमाल

हज़रत अ़ल्लामा मुफ्ती अबुल हसन मुहम्मद क़ासिम ज़ियाऊल क़ादरी लिखते हैं कि :

रिज़्क़ की तंगी के खौफ से बर्थ कंट्रोल नाजाइज़ है जैसा कि अल्लाह त'आला इरशाद फ़रमाता है :
अपनी औलाद को क़त्ल ना करो मुफ्लिसी के डर से, हम उन्हें भी रिज़्क़ देंगे और तुम्हें भी
(बनी इसराईल:31)

इस आयत से वाज़ेह हो गया कि तंगदस्ती के डर से औलाद को रोकना (Birth Control) नाजाइज़ है और अगर ऐसी कोई निय्यत ना हो तो ज़रूरत के तहत हमल को रोकना जाइज़ है।

हमल रोकने के कई तरीक़े आज कल राइज हैं जिन में से कुछ जाइज़ हैं और कुछ नाजाइज़।

जाइज़ तरीक़े ये हैं :
(1) गोलियाँ (Tablets) खाना
(2) इंजेक्शन लगाना
(3) केपस्यूल्स का इस्तिमाल
(4) कंडोम्स का इस्तिमाल
(5) कॉपर टी
(6) मल्टीलोड
मशवरा :
गोलियाँ, केपस्यूल्स, इंजेक्शन्स और कॉपर टी वग़ैरह का इस्तेमाल जाइज़ है पर तिब्बी लिहाज़ से ये नुक़्सान देह साबित हो सकते हैं।

अज़ल यानी मनी को औरत की शर्मगाह से बाहर खारिज करना और कंडोम्स का इस्तिमाल दोनो में मक़्सूद एक ही है कि हमल ना ठहरे तो ये तरीक़ा ज़रूरत के तहत इस्तिमाल किया जाये, इस में नुक़्सान कम है।

(فتاوی یورپ وبرطانیہ، ص518)

फ़तावा मरकज़ तरबियते इफ्ता में है कि अगर निरोध (Condoms) के इस्तिमाल की हाजत हो मस्लन औरत की सिह्हत (Health) का लिहाज़ मक़्सूद हो तो कंडोम्स और निरोध का इस्तिमाल जाइज़ है कि इसका मक़्सद सिर्फ मनी को औरत के रहम में जाने से रोकना होता है।

इस में न तो अल्लाह त'आला की पैदा की हुई चीज़ को बिगाड़ना है, न इस में कोई शरई क़बाहत है और न इससे औरत की सिह्हत को कोई नुक़्सान होता है लिहाज़ा इस का इस्तिमाल जाइज़ है।

(فتاوی مرکز تربیت افتاء، ج2، ص406)

कंडोम्स के इस्तिमाल का मक़्सद वाज़ेह है कि औरत को हमल ना ठहरे तो किसी वजह से ऐसा करता है तो कोई हर्ज नहीं है पर अगर इस डर से कि ज़्यादा बच्चे होंगे तो उनका खर्च किस तरह उठाया जायेगा और रिज़्क़ कहाँ से आयेगा तो ये सब बातें फ़ुज़ूल हैं और अल्लाह त'आला सब को रिज़्क़ अ़ता फ़रमाने वाला है।

अगर औरत की सिह्हत का लिहाज़ करते हुये ऐसा करता है मस्लन औरत ऐसी हालत में है कि हामिला (Pregnant) हो गयी तो माँ और बच्चे दोनों को खतरा है या फिर हकीम ने मना किया है तो इन सूरतो में कंडोम्स के इस्तिमाल में कोई हर्ज नहीं है।

हैज़ के दौरान सोहबत

हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अख्तर हुसैन क़ादरी से सवाल किया गया कि एक शख्स की शादी हुई और सुहागरात को ही औरत को हैज़ आ गया और उस शख्स ने इसी हालत में अपनी बीवी से सोहबत की तो वो अब क्या करे? क्या वो गुनाहगार हुआ?

आप जवाब में फ़रमाते हैं कि वो शख्स मुजरिम और गुनाहगार है और उस पर तौबा और अस्तग़फ़ार फ़र्ज़ है और एक दीनार यानी 4.665 ग्राम सोना या उस की क़ीमत किसी फ़क़ीर को सदका करे।
हदीस में है :

الذی یاتی امراته و هی حائض قال : یتصدق بدینار (سنن ابن ماجه)

बहारे शरीअ़त में है ऐसी हालत में जिमा (Sex) को जाइज़ जानना कुफ़्र है और हराम समझ कर किया तो सख्त गुनाहगार है और तौबा फ़र्ज़ है और आमद के ज़माने में किया तो एक दीनार और खत्म के क़रीब किया तो आधा दीनार खैरात करना मुस्तहब है।

(فتاوی علیمیہ، ج1، ص100)

सवाल किया गया कि औरत से हैज़ की हालत में कितनी मुद्दत तक दूर रहना चाहिये और उस के साथ किस तरह रहना चाहिये तो बहरुल उलूम अ़ल्लामा मुफ्ती अ़ब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं कि :
जब तक औरत को हैज़ आता रहे तब तक शौहर जिमा ना करे और नाफ़ से घुटने तक इख्तिलात से भी परहेज़ करना चाहिये इस के अलावा रहने सहने में किसी क़िस्म का परहेज़ नहीं।

एक सवाल और किया गया कि अगर औरत हमल से है तो क्या उस से सोहबत की जाये और कितनी मुद्दत तक ना की जाये?

आप लिखते हैं :
हमल की हालत में औरत से सोहबत करने में शरीअ़त की तरफ़ से कोई मुमानिअ़त नहीं है।
तिब्बी नुक़्ता -ए- नज़र से बात हो तो हम कह नहीं सकते।

(فتاوی بحر العلوم، ج1، ص79)

निकाह अगर हैज़ की हालत में हो जाये तो शौहर को चाहिये कि जब तक बीवी पाक ना हो जाये उस से सोहबत ना करे।
ख्याल रहे कि हैज़ की हालत में निकाह सहीह हो जाता है, इस के लिये पाक होना ज़रूरी नहीं है पर हैज़ की हालत में जिमा जाइज़ नहीं है।

(انظر: فتاوی خلیلیہ، ج2، ص38)

फ़तावा बरेली शरीफ़ में एक सवाल कुछ यूँ है कि हैज़ वाली औरत के नाफ़ या घुटने में जिमा कर सकते हैं या नहीं इसकी तफ्सील अ़ता करें।
जवाब में है कि पेट पर जाइज़ है और रान पर नाजाइज़ है।
(फिर मज़ीद खुलासा ये है कि) नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों तक शहवत की नज़र से देखना जाइज़ नहीं, छूना जाइज़ नहीं अगर्चे बिला शहवत हो और फाइदा हासिल करना जाइज़ नहीं।

(انظر: فتاوی بریلی شریف، ص165)

इस से मालूम हुआ कि अगर औरत हैज़ की हालत में हो तो उस के जिस्म में नाफ़ के नीचे से लेकर घुटनों तक तमत्तो जाइज़ नहीं यानी फ़ाइदा हासिल नहीं कर सकते।

बीवी के हाथ से मनी निकलवाना

सवाल हुआ कि अगर बीवी हैज़ की हालत में हो तो क्या वो अपने हाथ से शौहर की मनी निकाल सकती है?

अ़ल्लामा मुफ्ती ज़ुल्फिक़ार खान नईमी हाफिज़हुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि हाँ ये अ़मल जाइज़ है।

फ़तावा शामी में है :

يجوز ان يستمنى بيد زوجته او خادمته

(كتاب الحدود، 2/39)

अपनी बीवी या खादिमा (बान्दी) के हाथ से मनी निकालना जाइज़ है।

हैज़ की हालत में खुलासा ये कि :
औरत के नाफ़ के नीचे से ले कर घुटनों तक छूना हत्ता कि शहवत से देखना तक जाइज़ नहीं और अगर इस हिस्से पर कोई ऐसा मोटा कपड़ा डाल दे जिस से जिस्म की गर्मी महसूस ना हो तो उस के ऊपर बीवी से बोसो किनार (Kiss And Seduce) कर सकता है और दूसरे हिस्सों से फाइदा उठा सकता है जैसा कि बयान हुआ कि बीवी के हाथ से मनी निकलवाना और उस के पिस्तान (Breast) या पेट पर से फाइदा उठाना।

लव बाइट्स

ये भी एक अजीब तरीक़ा निकल गया है जिस में शौहर बीवी एक जिमा (Sex) के दौरान एक दूसरे के जिस्म पर निशानात छोड़ते हैं ताकि वो यादगार बन जाये या फिर इससे लज़्ज़त हासिल करना मक़्सद होता है।

इस में किया ये जाता है कि गर्दन या आस पास में कहीं के चमडे को कुछ देर तक होंटो से दबाया जाता है और अंदर की तरफ़ खींचा जाता है जिससे वहाँ एक निशान बाक़ी रह जाता है ये एक गैर मुनासिब अ़मल होने के साथ-साथ बड़ी अजीब हरकत भी है जो तक्लीफ़ का बाइस भी हो सकता है।

बेहतर है कि ऐसी बातो से बचा जाये और जिस तरह हमें आदाब सिखाये गये हैं उसी तरह जिमा करें ताकि वो ताज़गी और लज़्ज़त का सबब बने ना कि तक्लीफ़ और शर्मिंदगी का।

बात करें लज़्ज़त की तो जितनी ज़्यादा गैर मुनासिब बातो से परहेज़ करेंगे, उतना ही लज़्ज़त में इजाफ़ा होगा वरना ज़हन और वक़्त दोनो ऐसे कामों में सर्फ़ होगा जो अस्ल लज़्ज़त को कम कर देती हैं।

अल-हासिल ये कि जितनी ज़्यादा सादगी और हया मौजूद होगी उसी क़द्र लज़्ज़त में भी इज़ाफ़ा होगा।

मिस्वाक और खुशबू का इस्तिमाल

जिमा करते वक़्त चूँकि मर्द औरत एक दूसरे के बिल्कुल क़रीब होते हैं तो एक दूसरे के जिस्म की बू महसूस होना यक़ीनी है।
अगर किसी के जिस्म से ऐसी बू निकलती है कि जो तबियत को नागवार गुज़रती है तो ये ना सिर्फ़ लज़्ज़त को कम करेगा बल्कि एक दूसरे के लिये तकलीफ का सबब भी है।
वैसे तो इन्सान को चाहिये कि हमेशा खुद को पाक साफ़ रखे और मिस्वाक, खुशबू वग़ैरह का इस्तिमाल करे पर जिमा से पहले खास तौर पर मिस्वाक या टूथ ब्रश या और कोई चीज़ जिससे मूँह की बू को दूर किया जा सके और जिस्म की बू के लिये खुशबू का इस्तिमाल करना चाहिये।

इससे जहाँ लज़्ज़त में इजाफ़ा होगा वहीं एक दूसरे से घिन और नफ़रत से भी बच सकेंगे।
जो लोग साफ सफाई का ख्याल नहीं रखते है और जैसी तैसी हालत में जिमा करने लगते हैं तो ये एक तरफ़ ना पसंदीदा भी है कि किसी की तबियत को नागवार गुज़रे और दूसरी तरफ़ बीमारियों का सबब भी बन सकता है।

औरत मर्द दोनों को चाहिये कि खुद को साफ रखें और बात सिर्फ़ बू की नहीं है बल्कि और भी चीज़ें मस्लन गैर ज़रूरी बाल वग़ैरह को साफ़ किया जाये और साफ कपड़े पहने जायें।

Homosexuality (हम जिंस परस्ती)

अल्लाह त'आला इरशाद फ़रमाता है :
क्या वो बेहयाई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने ना की,
तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औरतों को छोड़ कर बल्कि तुम लोग हद से गुज़र गये। (अल आराफ़ : 80,81)

ये हज़रते लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम के बारे में इरशाद हो रहा है जिन्होंने Homosexuality (हम जिंस परस्ती) की इब्तिदा की थी यानी मर्द का मर्द से शहवत के साथ मिलना।

ये बुराई आज भी हमारे दरमियान मौजूद है।
मर्द और औरत दोनों में ये बला मौजूद है कि अपनी ही जिंस (Gender) से तस्कीन हासिल करते हैं जो कि खिलाफ़े शरीअ़त होने के साथ-साथ फितरत (Nature) के भी खिलाफ़ है।

ऐसे मर्द और औरतों को अंग्रेज़ी में गेय (Gay) कहते हैं और ये लफ्ज़ वैसे तो दोनों के लिये इस्तिमाल होता है पर औरतों के लिये एक लफ्ज़ लेस्बियन (Lesbian) मुस्तमल है।

ये सरासर नाजाइज़ो हराम और बहुत ही घिनौनी हरकत है जिस की मज़म्मत अल्लाह त'आला ने क़ुरआन में बयान की है और इतना ही नहीं बल्कि हज़रते लूत अ़लैहिस्सलाम की क़ौम पर अज़ाब भी नाज़िल किया गया और ये हमारे लिये इबारत है।

Hymen (पर्दा -ए- इस्मत)

औरत की शर्मगाह में एक पर्दा (झिल्ली)
जिसे हाइमन कहा जाता है, इसे औरत के पाक दामन होने का निशान समझा जाता है।
ये पर्दा हर औरत में एक जैसा नहीं होता बल्कि इस की मुख्तलिफ़फ़ सूरतें होती है। किसी में पतला तो किसी में मोटा होता है और कई वजहों से ये झिल्ली फट जाती है और मुकम्मल तौर पर ख़त्म भी हो जाती है।

पहली बार जिमा (सेक्स) के दौरान जब मर्द अपने आले को औरत की शर्मगाह में दाखिल करता है तो ये फट जाती है और इससे औरत को तक्लीफ़ होने के साथ साथ खून भी खारिज होता है। पर ये ज़रूरी नहीं कि जिम से ही ऐसा हो, पहले भी वो झिल्ली किसी वजह से फट सकती है तो अगर पहली बार जिमा करने पर खून ना निकले तो ये समझना कि औरत कुँवारी नहीं बिल्कुल मुनासिब नहीं।

तनवीरुल अब्सार में है कि :
जिस औरत का पर्दा -ए- इस्मत कूदने, हैज़ आने या ज़ख्म या फ़िर उम्र ज़्यादा होने की वजह से फट जाये तो वो औरत हकी़क़त में बाकिरा (कुँवारी, पाक दामन) है।

(تنویر الابصار)

आज कल लड़कियाँ दौड़ भाग वाले काम करती है और मुक़ाबलों में हिस्सा तक लेती है तो हो सकता है कि ये झिल्ली शादी से पहले फट जाये तो इसे कुँवारी होने का निशान समझना मुत्लक़न सही नहीं है।

जिमा की बातें लोगों को बताना

घर में चारों तरफ़ दीवार होती है, पर्दे हैं, दरवाज़े बनाये गये हैं ताकि कुछ बातें और चीज़ें घर के अंदर ही रहें पर अगर आप उन्हें फिर बाहर लाते हैं तो ये मुनासिब नहीं और इसका फाइदा तो नहीं पर नुक़्सान ज़रूर होगा।

अपनी बीवी या अपने शौहर के बारे में बातें कर सकते हैं पर लोगों के दरमियान वही बातें की जायें जो मुनासिब हैं।

लोगों के सामने अगर आप अपनी बीवी के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बातें बयान करेंगे जो नहीं करनी चाहिये तो लोग आपको अच्छा नहीं समझेंगे और ना ही ये कोई अच्छा काम है।

इसी तरह औरत को चाहिये कि शौहर के मुतअ़ल्लिक़ हर बात को आम ना करें बल्कि जो मुनासिब हो वही करें।

देखा गया है कि ये बातें मज़ाक़ की निय्यत से की जाती हैं पर ये इतना बढ़ जाता है कि लड़ाईयाँ तक हो जाती हैं मस्लन किसी ने अगर कोई ऐसा कमेंट कर दिया जो ना-गवार गुज़रा तो लड़ाई शुरू हो जाती है हालाँकि यही पहली गलती है कि ऐसी बातों को आम किया जाये कि इस से कमेंट्स करने का मौक़ा मिलता है।

किसी से शादी के बाद उस से ज़ाती सवालात करना

किसी से उस के हालात के बारे में सवाल करना या कोई मसअला पूछना अच्छी बात है लेकिन ज़ाती सवालात करना दुरुस्त नहीं है।
कुछ लोग बिना सोचे समझे बड़े अजीबो गरीब सवालात पूछ लेते हैं।

हज़रते सलमान फ़ारसी रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु ने जब शादी की और अगले दिन बाहर निकले तो एक शख़्स ने पूछा :
आप कैसे हैं?
आप ने फ़रमाया कि अच्छा हूँ और अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ।
फिर उस शख़्स ने पूछा :
रात कैसी गुज़री? या पूछा कि आप ने अपनी जौज़ा को कैसा पाया?
ये सुन कर आप ने (ग़ुस्से में) फ़रमाया : तुम ऐसा सवाल क्यों पूछते हो जिस का जवाब छुपाना पड़े, अल्लाह त'आला ने घरों के पर्दे और दरवाज़े इस लिये बनाये हैं ताकि अंदर की बात अंदर ही रहे.....,
तुम्हें घर से बाहर की बातें पूछनी चाहिये और सिर्फ ज़ाहिरी उमूर के मुतल्लिक़ पूछना ही काफ़ी है।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، اردو، ج1، ص349 و قوت القلوب، اردو، ج2، ص20)

एक शख़्स ने हज़रते सुलैमान बिन मेहरान आमश रहीमहुल्लाह से पूछ लिया कि :
आप ने रात कैसी गुज़ारी?

ये सवाल आप रहीमहुल्लाह को नागवार गुज़रा और आप ने बुलंद आवाज़ से अपनी कनीज़ को पुकारा कि बिस्तर और तकिया ले कर आओ....., जब वो ले कर आई तो आप ने फ़रमाया कि इसे बिछा कर लेट जाओ यहाँ तक कि मै भी तेरे पहलू में लेट जाऊँ ताकि हम इस (सवाल करने वाले) शख़्स को दिखा सकें कि हम ने रात कैसी गुज़ारी है!

आप रहीमहुल्लाह फ़रमाया करते थे कि (आज कल) एक शख़्स अपने दोस्त से मिलता है तो उस से हर शय के मुतल्लिक़ पूछ डालता है यहाँ तक कि घर में मौजूद मुर्ग़ी तक की खैरियत मालूम कर लेता है लेकिन उस का दोस्त उस से एक दिरहम माँग ले तो वो नहीं देता! जब सलफे सालिहीन आपस में मिलते तो सिर्फ ये कहते कि आप कैसे हैं? या फ़रमाते कि अल्लाह त'आला आप को सलामत रखे और अगर उन से कुछ माँगा जाता तो फौरन अ़ता फ़रमा देते।

(ملخصًا: قوت القلوب، اردو، ج2، ص20، 21)

बीवी का दूध हलक़ में चला जाये तो

अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाह त'आला से सवाल किया गया कि ज़ैद ने मस्ती में अपनी बीवी ख़ालिदा के पिस्तान (Breast) को मुँह में लिया और दूध आ गया और हलक़ से उतर गया तो निकाह टूटा या नहीं? और बीवी शौहर के लिये हलाल हुई या हराम?

आप जवाब में लिखते हैं कि औरत का दूध हलक़ से नीचे उतार जाने से निकाह पर कोई फर्क नहीं पड़ा, वो बा-दस्तूर उस की बीवी है।

(فتاوی بحر العلوم، ج5، ص368)

अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा त'आला से सवाल किया गया कि ज़ैद के यहाँ बेटा पैदा हुआ, बच्चा अपनी माँका दूध
पीता था।
कुछ रोज़ बाद ज़ैद ने बच्चे को माँ का दूध पिलाना छुड़वा दिया और डब्बे का दूध पिलाना शुरू कर दिया।
ज़ैद ने खुद अपनी बीवी का दूध पीना शुरू कर दिया! जिस तरह बच्चा पीता था, ज़ैद के इस अमल से उस के निकाह पर हुक्मे शरई बयान फरमायें।

आप जवाब में फरमाते हैं कि निकाह की हुरमत इस सूरत में होती है कि पीने वाले की उम्र ढाई साल से कम हो और जब ढाई साल से ज़्यादा हो जाये तो दूध पिलाना उस वक़्त नाजाइज़ होता है लिहाजा शौहर का ये अमल गुनाह है, इस फ़ेल से बाज़ रहना चाहिये मगर इस की वजह से निकाह पर कोई असर ना होगा।

(وقار الفتاوی، ج3، ص80)

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला एक सवाल जिस में बीवी के पिस्तान को मुँह में लेने और बीवी को माँ कह देने के ताल्लुक़ से सवाल किया गया था, के जवाब में लिखते हैं :

सूरते मज़कूरा में वो उसे माँ और इसे बेटा कहने से दोनों गुनाहगार हुये कि अल्लाह त'आला ने फरमाया कि बेशक लोगों का बीवी को माँ,बहन कहना बुरी बात और झूट है।
(क़ुरआन, 2:58)
पर निकाह में कोई फ़र्क़ न आया और पिस्तान मुँह में लेना तो कोई चीज़ नहीं, अगर दूध पी भी लेता तो वो पीना हराम मगर निकाह में इस से खलल न आता कि ढाई बरस की उम्र के बाद दूध से हुरमत नहीं होती और अब दोनों को जुदा रहने की कोई हाजत नहीं, वो बा-दस्तूर ज़ौजो ज़ौजा (मियाँ बीवी) हैं।

(فتاوی رضویہ،ج13،288)

इस से बिल्कुल वाज़ेह समझ आता है कि पिस्तान का मुँह में लेना कोई चीज़ नहीं यानी इस में कोई हर्ज नहीं पर दूध पीना हराम है जिस से बचना ज़रूरी है।
अगर किसी ने पी लिया या पिस्तान मुँह में लिया और दूध आ गया और हलक़ से उतर गया तो निकाह पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

फ़तावा मुहद्दिसे आज़म में एक सवाल है कि अगर कोई शक्ख शौक़ से अपनी मनकूहा के पिस्तान को मुँह में डाले और दूध उस से बह कर हलक़ से उतर जाये तो क्या निकाह टूट जाता है?

लिखते हैं कि दो साल बल्कि ढाई साल के अंदर कोई लड़का और लड़की किसी औरत का दूध पी ले तो जिस औरत का पिया वो रज़ई माँ और जिस ने पिया है वो रज़ई औलाद है और अगर इस मुद्दते रिज़ाअत के बाद कोई शख्स किसी औरत का दूध पिये तो उस का दूध पीने से हुरमते रिज़ाअत साबित नहीं होती और रिज़ाअत का रिश्ता साबित नहीं होता।
अगर कोई अपनी औरत का दूध पी ले तो ये काम यानी दूध पीना शरअन मना है, गुनाह है मगर इस से निकाह नहीं टूटेगा।

सूरते मज़कूरा में जिस शख्स के हलक़ में उस की बीवी के पिस्तान से दूध चला गया ख्वाह शौहर के उस के पिस्तान चूसने से या बगैर चूसे, इस से निकाह नहीं टूटेगा और वो इस कि बा-दस्तूर बीवी है।
बीवी का दूध पीना शरअन मना है, शदीद गुनाह है और जो ऐसा करते हैं उन पर तौबा लाज़िम।

(فتاوی محدث اعظم، ص115)

तहक़ीक़ी फ़तावा तलबा जामिया समदिया में एक सवाल है कि शौहर अगर बीवी का दुध पी ले तो रिजाअत सबित होगी या नहीं?
जवाब में तहरीर है किरिजाअत की मुद्दत ढाई साल है, उसके बाद नहीं शौहर अगर बीवी का दुध पी ले तो रिज़ाआत सबित नहीं होगी अगरचे औरत का दूध पीना जाइज़ नहीं।

इन तमाम फ़तवों से मालूम होता है कि :
(1) ढाई साल के अंदर अगर कोई दूध पिये तो रिज़ाअत सबित होगी वरना नहीं।
(2) बीवी का दूध अगर शौहर के हलक़ से उतर जाये तो निकाह पर कोइ फ़र्क़ नहीं पड़ता।
(3) बीवी का दूध पीना जाइज नहीं है बल्कि शदीद गुनाह है और जो ऐसा करते हैं तो तौबा करनी चाहिये।

जिंसी ताल्लुकात के हवाले से हमने मुख्तसरन कई बातों पर लिखने की कोशिश की है जिनकी ज़रूरत हमें महसूस हुई।
इस मौज़ू पर और भी लिखने के लिये काफ़ी कुछ है पर चूँकि हमारा मक़सद लोगो को मुख्तसर और आम फहम अंदाज में ये बातें बताना था लिहाजा ज़्यादा लम्बी बहस करने या मुशकिल अलफाज और मौज़ूआत को शामिल करने से परहेज़ किया गया है।

Our Other Pamphlets

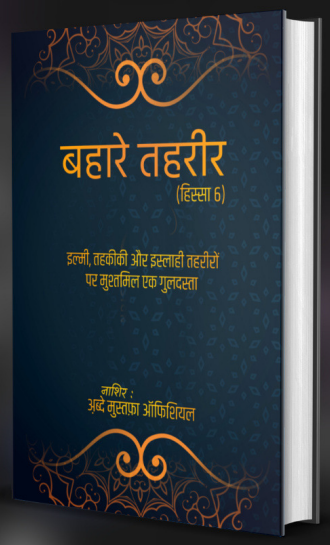

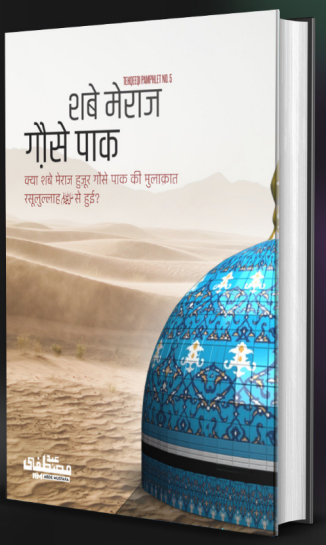

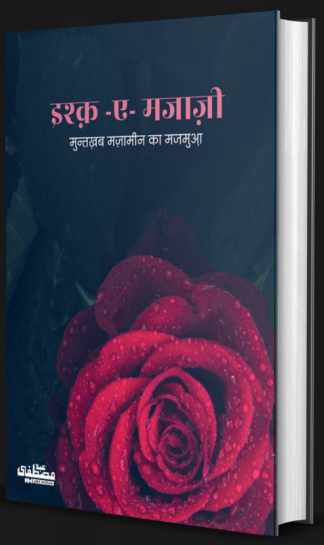

Abde Mustafa Official